219

स्वामी दर्शन

स्वामी मारहरवी

Price Rs. 4/-/-

स्वामी दर्शन

स्वामी मारहरवी

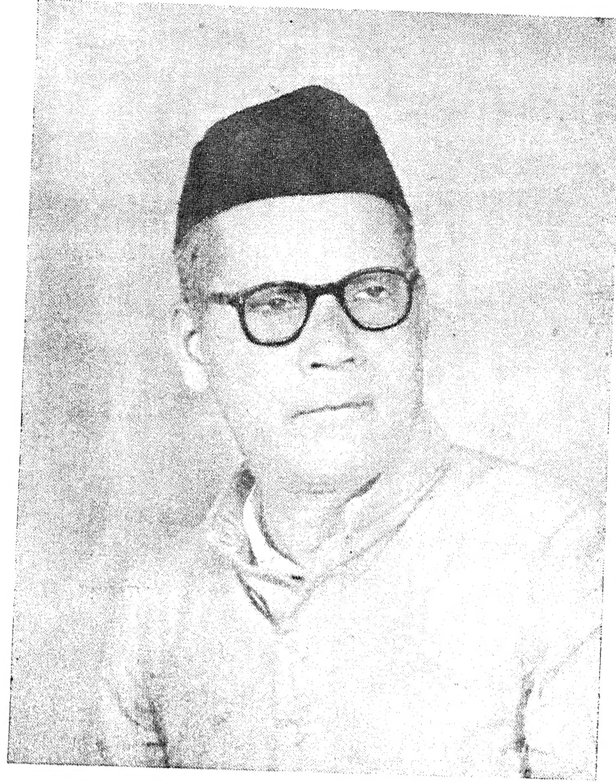
नाशिर :– निज़ामी बुक एजन्सी बदायूं

फ़हरिसत मज़ामीन स्वामी दर्शन

नं० शुमार	सुफा	नोईयत	उनवान	मिसरा अव्वल
१	अ		पेश लफज	
२	१	हमद	किन तैराये	सांज सवेरे कहाँ से आये
३	२	नज़्म	स्वामी दर्शन	आओरी सखियो हिल मिल चलें मारहरे...
४	४	,,	हार जीत	पर्वत से इक स्वामी उतरा
५	६	,,	मूरख मेरा साजना	भांति भांति के खेलखिलौने
६	६	,,	घूंगट ओट	एक कठिन परबत से भारी
७	११	,,	जीवन ज्योत	जिस दूध से मैं कुम्हला जाऊं
८	१३	,,	यह कौन सी ऋतु है	अरा हैरी सखी यह कौन सी ऋतु है
९	१५	,,	मन माला	मन धर्म आतम मन पर्म आतम
१०	१७	,,	और चलाचल थके मुसाफ़िर	आँख से ओझल दूर है मंजिल
११	१९	,,	किस की है आवाज	दूर से मुझ को किसने पुकारा ?
१२	२१	,,	भूका बालक	चुटकी चुटकी आटा देदो
१३	२३	,,	जेय चरखे की	देश पती जी पुरया पूरें
१४	२४	,,	सुन्दर कठुएई	इक नार अनेली अलबेली
१५	२५	,,	पंचों हाथों पिटा दिवाला	ठौर न पूछो गाम न पूछो
१६	२८	,,	दुख की अकथ कहानी	जन्म के बैरी पापी नाथू
१७	३०	,,	शान्त सदेश	जीवन का आदर्श पुराना
१८	३२	,,	कृशक बिनती	करके वेहड़ मेरी बाखर
१९	३४	,,	स्वागत पत्र	इस भरी सभा में पूरी जो !
२०	३७	,,	आकाश रँग	धर्म आतम पर्म आतम बदले
२१	४०	,,	स्वामी जी कुटया	हह इल्म के दरया बहते हैं
२२	४२	,,	फुर फुर उड़े तिरंगा	अब अपने घर का राज मिला
२३	४३	,,	उड़यो पंछी धीरे धीरे	धीरे धीरे उड़यो पंछी
२४	४४	,,	स्वपना	स्वपनों ने नित रुप हैं धारे
२५	४७	,,	दिये तरे अंघयारे	चलने से मत हार मुसाफिर

नं. शुमार	सुफा	नोईयत	उनवान	मिसरा अव्वल
२६	४६	नज़्म	टके का यह मज़दूर	कल तक था जो बोझ ज़मीं का
२७	५२	,,	मुसाफ़िर ख़ाने में	यह दुनिया कितनी सियानी है
२८	५६	,,	ऐसे हैं हम लोग	दुशमन की तलवार से कांपे
२९	५८	,,	राम फंसे जंजालों में	मस्जिद सूनी मन्दिर वीरां
३०	६०	,,	स्वागत	जमना नगर के बासी को
३१	६३	,,	क्या खूब यह अंजाम है	याँ धर्म हैं बदले हुये, बदला हुआ धर्म आत्मा
३२	६६	,,	भगवान तो इनमें कोई नहीं	पिघला हुआ है कुछ पारा सा
३३	६८	,,	जीवन की ख़ोज में	इक सोच में उलझा रहता हूं
३४	७०	,,	चलें बिदेश	रुख की सूखी इक इक डाली
३५	७१	,,	चित चोर	आये बिराजे मन के द्वारे
			गीत माल	
३६	७५	गीत	गोरी पीसे पीसना	धीरे धीरे चाले चाकी
३७	७७	,,	पिया पिया मत बोल	ऐसी बोली बोल रे पंछी
३८	७९	,,	फूलन की ओढ़नयाँ	दमक झलाझल ओढ़ लई में
३९	८०	,,	गजब भरी सासुलयामोरी	बहकाये लियो ललना को अपने
४०	८१	,,	मन के दीप	जब अम्बर छाओं घनेरी हो
४१	८३	,,	सुन्दर गलियाँ	तेरी गलियों भूल भुलय्याँ
४२	८५	,,	आये बसो भगवान	मन में आये बसो भगवान
४३	८६	,,	कौन सुने तेरी कूक	पापिन बरखा की रैन अंधेरी
४४	८७	,,	भूकी कन्निया	धर्म आतम घर घेरे डारी
४५	८९	,,	सौ की मारी एक दिवानी	लाल ततय्या सासुल मोरी
४६	९१	,,	तुम ना आये	मोरे सजनवा तुम ना आये
४७	९३	,,	स्वामी सहारा	टूटी नय्या भंवर थपेड़े
४८	९४	,,	बेड़ा पार लगे तो कैसे	तीर्थ कहीं अशनान कहीं है
४९	९५	,,	धोबिन का गीत	हरि ही माया हरि ही दाम
			हिन्दी के क़तआत	
५०	१०३	क़िता	नई शक्ती नया भगवान	आज के सारे स्वपन नये,
५१	१०३	शेर	मा की मौत पर	मांझी भी वहीं था साहिल पर

शुमार	सुफ़ा	नोईयत	उनवान	मिसरा अव्वल
५२	१०४	क़िता	एक प्रर्थना	तुम को भगवान की सुगंद है
५३	१०५	,,	नये चिराग़ पुराना अंधेरा	नया समय है, नया है दिवस, नया सवेरा है
५४	१०६	,,	दो रंगी ममता	सुन सुन री ओ भारत माता
५५	१०७	,,	जाति रोग	काहू संग सत संग न लागे,
५६	१०८	,,	औरत एक बिकाऊ माल	कोई कहत तो अत की मट्टी, कोई कहत अन मोल
५७	१०९	,,	एक उत्तर	ना तो हूं मैं अति की मट्टी, ना हूं मैं अन मोल
			दोहे	
५८	११३	दोहे	नौ—रत्न (दोहे)	अगनी पूजें' पत्थर पूजें, कोई पूजे पीपर
५९	११५	,,	दोहे	प्रेम का दीवा प्रेम की बाती प्रेम का लागो तेल
			पहेलियां	
६०	११९	पहेली	पहेली	एक मां बाप के दो हैं बच्चे
			उर्दू नज़में व क़ितआत	
६१	१२५	क़िता	एक अहतजाज	वह फलसफीये पीरे खुदी साहिवे इदराक
६२	१२६	नज़्म	घर के पीरों से खिताब	ऐ पीरजादो मुरशदो, ऐ मजहबी सौदागरो
६३	१२८	,,	प्रदर्शनी	यह दो दिन के मेले का बाजार देखो
६४	१३१	,,	अपने नाखुदा से	चमन उदास उदास है गुलों में रंगो बू नहीं
६५	१३५	,,	फ़र्ज़ी मुक़ाम	अजब यह जमाने का नैरंग है
६६	१३६	,,	नजरे अक़ीदत	कहूं मैं किस से हाले दिल ? कोई नहीं है दर्दमन्द
६७	१३९	,,	हमारी ही बिल्ली हमीं से	किसानों ! तुम अपने मिहरबाँ तो देखो
६८	१४१	ग़ज़ल	तुम दूर दूर हो	क़िस्मत हुये थे तुम कि रहो मेरे पास पास
६९	१४३	,,	गुफ़तनी—नागुफ़तनी	गुफतनी ना गुफतनी है मुंह मिरा खुलवाओ ना
७०	१४४	क़िता	आदमी के रूप	आदमियों में फूल भी देखे
७१	१४६	,,	मेरी दुआ	सोचता हूं कि क्या दुआ मांगू
७२	१४७	,,	क़ज़यऐ जमीं	तिरी खुदाई हो जिस जहाँ में, मैं वह जहाँ
७३	१४८	ग़ज़ल	मालूम नहीं क्यों	उस बज्म गहे नाज में मजमूअए दिल का
७४	१४९	,,	आप क्या जानें	मेरी क़िस्मत में आप ? अरे तोबा
७५	१५०	नज़्म	चौंको तो जरा जागो तो	जब रंग भरे तसवीरों में
७६	१५२	क़िता	कवि का अता पता	स्वामी नाओं विचार के जनम लियो वा गाँओं



मोरे प्रेम संदेसे कहदेना, यह चित्र उन्हें दिखला देना
वह फिर भी मोहे ना जनहीयें तो स्वामी नाउं बता देना

मैं

अपने इस नाचीज़ और हक़ीर से सरमाय हयात

को

अपने बहुत ही अज़ीज़ दोस्त

आली जनाब निसार अहमद ख़ां शेरवानी

मरहूम व मग़फ़ूर

अललल्लाहे मुक़ामहू व नूर अल्लाह मरक़दहू

साबिक़ वज़ीर ज़राअत उत्तरप्रदेश की मुक़द्दस व पाक रुह के नाम

मानून करता हूँ !

जो अपनी ज़िन्दगी भर इस हद तक सराहते और स्वामी नवाज़ी फ़रमाते रहे कि आज जब कि मौत के सफ़्फ़ाक़ और कठोर हाथों ने हमेशा हमेशा के लिये इन्हें हम से छीन लिया लेकिन वह अपनी तमाम मुहतरम यादों के साथ शाइर के दिल में अब भी हयात हैं !

स्वामी मारहरवी

पेश लफ़्ज़

अपनी ज़िंदगी के इन अइयाम में जब कि कुदरत ने मुझे बिलकुल मजबूर कर दिया और माज़ूर महिज़ बना दिया है, मैं शेरो सखुन को तर्क करके गोशा नशीं होगया हूं अपनी हयात का कुल सरमाया इन गीतों और नज़मों की शक्ल में तरतीब दे कर पेश करते हुये जब मैं इन पर निगाह डालता हूं तो मेरे ज़हिन में एक आवाज़ आती है कि मेरी वादी कितनी सरसब्ज़ व शादाब थी।

यह नज़्में और गीत जो आप के हाथों में हैं इन में उस शाइर और उस इनसान का दिल धड़क रहा है जो ज़िंदगी की मुख़तलिफ़ राहों में दर बदर भटकता रहा है और हर दर से अपने कासये ख्याल में कुछ न कुछ लेकर ही वापिस पलटा है और अपनी झोली में अब तक इस ने जो कुछ जमा क्या है वह आज आपके सामने पेश कररहा है।

इन राहों में मुझे कितने ही पेचोख़म भी मिले जिन में इनसान अपनी मंज़िल की तलाश में भटक रहा है और रासता भूला हुआ है। उन में पंडित और मौलवी भी मिले जो मज़हब की दूकानें सजाये उस के मासूम दिल को अपने दाम में असीर करने की फ़िक्र में बैठे हैं

इन में वह सरमायादार भी मिले जो मिहनत कशों के बहे हुये पसीने से अपने जाम भरने की फिक्र में लगे हैं, उन में मुहब्बत की सच्ची उमंग से भरपुर तराने भी मिले और वह सियासत भी नज़र आई जो दिलों को नफ़रत की बुन्याद पर तक़सीम करदेती है उन में आँसू भी मिले और मुसकुराहटें भी।

मैं इंसानीयत को तलाश करता हुआ हर दरवाजे पर ठैहरा, इस धुन और लगन के साथ कि "शायद कि हमें बैज़ा बरारद परो बाल"— शायद यहाँ से इंसान के ग़म का सही दरमाँ मिल जाये, शायद रोशनी की वह करन नज़र आजाये जो इस अंधेरे का दामन चाक कर सके शायद यहीं से कौई रासता अमन व मुहब्बत की तरफ जाता हो, इस तलाश और जुसतुजू को दिल में लिये मैं कभी मसजिद की महराबों में पुंहचा, कभी मन्दिर में दर्शन करने गया, कभी मौलवी की तरफ पुर उम्मीद नज़रों से देखा तो कभी पंडित की तरफ और कभी सियासत दानों की तरफ, लेकिन यह बताते हुए मुझको दुख होता है कि मुझे मायूस ही लौटना पड़ा।

मैं ने यहाँ जो कुछ देखा उस ने मेरे दिल को बेज़ार करदिया, मुझे वह तलख़ हक़ीक़तें मिलीं कि जिन्हें देखकर भूल जाना ही अच्छा था, मैं दिल शकिशता और मायूस था कि यकायक मैं ने एक तालाब के किनारे चूड़ीयों की झंकार के साथ धोबन का एक गीत सुना मैं ठिटका, क्यों कि अब तक जो कुछ मैं ने देखा था वह सब कुछ खूबसूरत परदे के पीछे भयानक फ़रेब के सिवा कुछ न था, लेकिन गन्दगी को धोने वाली के इस नग़मे में कोई परदा न था, ज़िन्दगी की सच्चाई और खुलूस के जज़बात थे, इस सच्चाई ने मेरे दिल को मोह लिया,

मैं इस जानिब नई उम्मीद से बढ़ा और मेरी नज़रों के सामने खलयान आये, धरती के साने पे चलते हुये हल मिले जो दुनिया के लिये सुनैहरे खेत पैदा करते हैं, चक्की पीसते हुये मिहनती हाथ मिले इन की ज़िंदगी ने मुझे बे हद मुतास्सिर किया क्योंकि यहाँ किसी खूबसूरत और रंगीन परदे के पीछे छुपा हुआ कोई छल फरेब नहीं था, सिफ ज़िंदगी का हुसन ही हुसन था, मैं ने इन ही की ज़ुबान में इन के ही अलफाज़ में उन के दिलों की धड़कनों को पेश करना शुरू किया।

यहीं से मेरी शाइरी में एक नया मोड़ पैदा हुआ और मुझे एक मुसतक़िल मौजू मिल गया जिसे मैं अपने सारे गीतों में अपनाये हुये हूं, इन सच्चे और मासूम इंसानों के गीतों को पेश करते हुये मैं ने इन की ज़िंदगी को क़रीब से देखा तो बद हाली और महरुमी की जो तसवीर मुझे नजर आई वह मुझे तड़पाने के लिये काफी थी, इस तसवीर पर मैं ने इन के साथ आँसू नहीं बहाये, इन की फरयाद की लै में लै मिलाने से कोई फायदा नहीं था, मैं ने उन्हें जागने का सबक़ दिया, मैं ने इन्हें यह भी बताया कि यह वसी ज़मीन और ज़मीन की सारी दौलत इन की है, उठें और इसे हासिल करें।

अब मेरे गीतों में आँसूओं की नमी की जगह बग़ावत की दबी दबी चिंगारियाँ थीं, ज़िंदगी की पूरी हरारत थी, अब मैं दिले शकिसता नहीं था, मेरा दिल पुर उम्मीद था, यह चिंगारियां जो भड़कीं तो शोले बन कर सारे समाज के खिरमन में आग लगाने को बेचैन थीं और वह तलख़ हक़ीक़तें कि जिन्हें देख कर भूल जाना ही अच्छा था अब मेरा क़लम इन के परदे चाक कर देना चाहिता था अब न मुल्ला खुश था न पंडित, न घर के पीरज़ादे मुतमइन थे, दोनों बरसों मुझे तलाश करते और मेरी फिक्र में लगे रहे लेकिन कोई भी

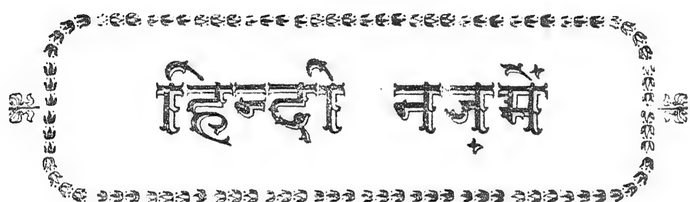
मुझे न पासका क्यूंकि मैं तखुल्लस का हिन्दू और नाम का मुसलमान था इधर मौलवी के फतवे और उधर पंडित के इताब में घिरा हुआ मैं सोचता था कि

ज़ाहिदे तंग नज़र ने मुझे काफ़िर जाना
और काफ़िर यह समझता है मुसलमां हूँ मैं

लेकिन मैं इस तूफ़ान में भी अपनी जगह मुतमइन और चटान की तरह अटल हूँ क्योंकि मेरे गीतों में सिफ मेरी ही आवाज़ नहीं बल्कि लाखों दुखी इंसानों की आवाज़ भी शामिल है, इस मजमूए को पढ़ कर अगर आप भी मेरी हमनवाई करेंगे तो मैं समझूँगा मेरी मेहनत सफल है।

स्वामी मारहरवी




हिन्दी नज़्में

* किन तैराये *

—— :o: ——

साँझ सवेरे कहाँ से आये * किसने अम्बर तारे सजाये

जग उजयारे किन चमकाये * रैन अंधेरे कहाँ से आये

किसने गत गत रूप रचाये * मसजिद मंदिर मठ बनवाये

दूध कटोरे किन छलकाये * किसने रिम झिम धुन बरसाये

आँख से ओझल रूप चुराये * चतुराई की ओट लगाये

ध्यान से बाहर जग में समाये * राई पर्वत सब पर छाये

याद से जिसकी ढारस आये * नाम की रटना जी बहलाये

डाली डाली फूल खिलाये * चमन चमन खुशबू महकाये

दीप बिना जुगनू दैहकाये * सीप बिना मोती न बनाये

सागर में तूफ़ान उठाये * तूफ़ाँ से तिनके को बचाये

कोई तो चातुर यह बतलाये

मछली के जाये किन तैराये

॥ स्वामी दर्शन ॥

——:o:——

आओ री सखियो हिल मिल चालें मारहरे में लागो मेला
आज इक स्वामी दर्शन देंगे प्रेम बटेगा भर भर झोला

वह देखो ! वह निकरो स्वामी पातर पातर ठुमका ठुमका
ऊँचे मस्तक गात इकहरे कोमल कोमल हलका फुलका

कवि के रूप इक बोलता जादू गीतों में आकाश की बाँणी
मधुर घुघर सी श्याम कथायें सत में डूबो राम कहानी

आप गुरू और आप ही चेला दोऊ बीच ना कोई झमेला
अपने गीतों आप अलबेला आप लगाये दर्शन मेला

आप कथे और आप ही गाये अपनी चिन्ता आप मिटाये
ना आशा ना कोई निराश भोग बिना भगवान रिझाये

श्याम बरन केसरिया बाना साँवल साँवल रूप सलौना
प्रेम की बंशी राधा नाचे छुन मुन बाजे प्रेम खिलौना

कली भी मसले फूल भी मसले दरस बहाने सब के रस ले
भौंरा सी रसमोर जवानी हँस हँस के वह सब को डस ले

ज़ग मग जग मग ज्योति उजीते ज्ञान के बल अभिमान सुधारे
ना हिन्दू ना तुरक बिचारे दोऊ जल सत संगम धारे

इस काया के रूप में स्वामी निरमल देह निरदोश किये है
तिहारे नाँऊ पे हे भगवान अपने मन सन्तोष लिये है

ऊँची सी दूकान में स्वामी फीका सा पकवान सजाये
नांउं बड़े और दर्शन छोटे ऐसे से भगवान बचाये



❀ हार जीत ❀

——:o:——

पर्वत से इक स्वामी उतरा दिल्ली देश पधारा
अंग भभूत और शीष जटायें महकत जैसे फूल हज़ारा

साथ लिये कुछ डब्बे डिब्बे हाथ में खुरा इलहान चिकारा
जादू के कुछ खेल खिलौने ज्ञान मती का एक पिटारा

आज़ादी के चट्टे बट्टे राज रोग का इक पुशतारा
एक फरेरा फुर फुर उड़ता दमकत जिस पर लाल सितारा

पोथी पत्रा खोल के पूछा क्या है अरमान तुम्हारा
कोइ बोला जय-हिन्द बोलो कोई पाकिस्तान पुकारा

दाँत में उँगली दाब के बोला हाये हिन्दूस्तान हमारा
बिच मंझधार पड़ी है नय्या आँख से ओझल दूर किनारा

बाँटे से तो भाँडा फूटे फूट वहे जग............सारा
और रहे साझे की हाँडी खद पद पाके खून हमारा

पूत सपूत कपूत बने करतूतों ने छल रूप सँवारा
भाड़ में जाये ऐसा भाई जान से मारे भाई प्यारा

जादू की फिर छड़ी घुमाई मूँद लीं आँखे लाल अंगारा
आ पहुंचे सब देवी देवता फूट का भरते चटखारा

अजगर अजगर पंच जुड़े हैं घर का है बटवारा
भारत माता ठाड़ी पूछें को जीता को हारा



* मूरख मेरा साजना *

——:o:——

भाँति भाँति के खेल खिलौने उनसे खेले साजना
गोरे गोरे रूप तिहारे मूरख मेरा साजना

माटी के रंग रूप हैं स्वामी कारी पीरी चीका माटी
चन्दन माटी कुन्दन माटी माटी में से चमके माटी
माटी की यह मधु भरी अँखियाँ होंट रसीले माटी
माटी के सब छैल छबीले चम चम चोले माटी
माटी में के रूप स्वरूपी माटी में का जोबना
उन से खेले साजना........मूरख मेरा साजना

भांति भांति के खेल खिलौने उनसे खेले साजना
गोरे गोरे रूप तिहारे मूरख मेरा सजना

कोई गुलाबो कोई शतबो सज धज सब की प्यारी
गाहक रूपी जिंस सजी है पेंठ लगी·········है भारी
दाओ घात की आढ़त लागी भाव करें व्यापारी
कहीं सोने रूपे ढेर लगे कोई प्रान करे बलिहारी
घूघंट ओट मधुरता लूटे हंस हंस मेरा साजना
बाला मेरा साजना!················ मूरख मेरा साजना

भाँति भाँति के खेल खिलौने उनसे खेले साजना
गोरे गोरे रूप तिहारे मूरख मेरा साजना

रीति प्रीत के नाते जोड़े कथ लई प्रेम कहानी
सपने में बनके कमला पाती झूठी सेजें अति इतरानी
घट घट बजरी लहरें लेवे धमक ठसोका चाले ज्वानी
काल की ठोकर ऐसी लागी देह लगी चकरानी
अब धूल गठरिया सन्मुख राखे टुस मुस रोवे साजना
भोला मेरा साजना················मूरख मेरा साजना

भाँति भाँति के खेल खिलौने उनसे खेले साजना
गोरे गोरे रूप तिहारे मूरख मेरा साजना

यह विधि ने कैसी लीला रचदई पड़गई आपा धापो
चोरी चोरा मन भटकत है राई रामा जीभ अलापी
रूप भरे बहरूप भरे हर रूप में छल चिन्ता व्यापी
अब साधु बने हैं स्वामी विचारे मन तो जिनका पापी
ऐसे पापी साधु को पूजे झुक झुक मेरा साजना
बौरा मेरा साजना.................मूरख मेरा साजना

भाँति भाँति के खेल खिलौने उनसे खेले साजना
गोरे गोरे रूप निहारे मूरख मेरा साजना

* घूँगट ओट *

——:o:——

एक कठिन परबत से भारी उलझी को सुलझावे कौन
कागद लेखा सब कोई बाँचे मन की उलझन बाँचे कौन

नदिया किनारे गुप चुप ठाड़ी अब यह भेद बतावे कौन
दो दो नय्या दो दो खिवय्या जीवन पार लगावे कौन

देख सखी ! धनवान हैं कैसे तो को निर्धन लागे कौन
प्रेम की माया मुक्ती छाया पूछ तो इन में राखे कौन

एक तो मोरे जीवन साथी उनसे मोको प्यारे कौन
दूजे बस में मरना जीना वह जो जियाय मारे कौन

पोथी पत्रा पंडित बाँचे मन को बाँचे जाने कौन
मन की पहेली किन से बूझूं अब यह बात बताये कौन

घूंगट ओट करूं मैं कित लंग किन को लेहूँ थाम
इक लंग मोरे स्वामी ठाड़े इक लंग ठाड़े राम



(११)

❋ जीवन ज्योति ❋

——:o:——

जिस दूध से मैं कुम्हला जाऊं ❋ जिस गोदी में मुरझा जाऊं
जिस ममता से घबरा जाऊं ❋ जिन खेलों से बौरा जाऊं

तुम ऐसे खिलौने मत देना
मा ! जीवन ज्योति जगादेना

कुछ ऐसा सिखाना इशारों में ❋ मैं हुमक उठूँ गहवारों में
इक शोर सा हो ज्यकारों में ❋ तुम दूध की अम्रत धारों में

सब इलमों को घुलवा देना
मा ! जीवन ज्योति जगा देना

तुम कौम पे मरना सिखा दीजो ❋ तुम आन पे मिटना बता दीजो
मत मीठी लोरी सुला दीजो ❋ तुम बुझते दीप जला दीजो

इक आग सी तुम भड़का देना
मा ! जीवन ज्योति जगा देना

आकाश के तारे चुन लूंगा * गागर में सागर भर लूंगा
मा ! तुम जो कहोगी सुन लूंगा * हर मुशकिल को हल करलूंगा

कुछ आस सहारा दे देना
मा ! जीवन ज्योति जगा देना

मैं जल में आग लगा दूंगा * जो मौज उठी बिठला दूंगा
हर पत्थर को पिघला दूंगा * मैं देश पे शीश चढ़ा दूंगा

मत टुस मुस टुस मुस रोदेना
मा ! जीवन ज्योति जगा देना

जब भाई को लड़ते देखो तुम * आपस में झगड़ते देखो तुम
यह आग भड़कते देखो तुम * जब घर को उजड़ते देखो तुम

तुम रूठे पूत मिला देना
मा ! जीवन ज्योति जगा देना



* यह कौन सी ऋतु है *

——:o:——

अरी हैरी सखी यह कौन सी ऋतु है कल कल सारी बेकल है
कुछ भीनी महक है जीवन में और हृदय में इक हल चल है

मैं हलकी पवन में झूलत हूँ और डाली डाली कोमल है
कुछ कलयाँ खिल खिल फूलत हैं और भंवरों में इक खल बल है

यह देह में कैसी कसा मसी है लौट पलट सी पल पल है
कुछ पात हरे, कुछ गात भरे, नित रूप, निराली अल बल है

इक बहकी बहकी धुना मुनी है नैनन में कुछ छल बल है
जिस रूप पे सौ सौ रंग रचे उस रूप का तारा झल झल है

वह भोली भोली बात नहीं अब बात जो है सो अचपल है
यह ऋतु क्या बदली ? जीवन बदला, बदली चाल भी चंचल है

कुछ बोल बता अरी हैरी सखी ! यह कौन ऋतु है प्यारी सखी
वुह बाल खिलौने कित हैं सखी ? इन खेलों से मैं तो हारी सखी

वह कौन समय था हे स्वामी ! यह देह जो गोदों गोद रही
इक फूल थी मैं, मन फूल बनी इस भूल में ऐसी अबोद रही

कुछ पूछ सखी न बूझ सखी ! क्यों दीप पतंगों में लाग रही
इक रात का बात में भस्म भए इस लाग में कैसी यह आग रही

यह कौन पिया को पुकारात है क्यों अमवा पे कोयल कूक रही
यह कूक करिजवा को फूँकत है किस काम की तेरी यह हूक रही

यह कौन सी ऋतु है प्यारी सखी ! जो मन की चोट पे मन हर लागे
और सुनेगी हेरी सखी ! यह नैना मोरे गजब कर लागे



❀ मन माला ❀

मन धर्म आतम मन पर्म आतम मन ही सीता मन ही राम
मन ही मूरति मन ही पुजारी मन ही राधा मन ही श्याम

मन ही बूंद और मन ही सागर मन ही अहला मन ही मौज
मन ही नय्या मन ही खिवय्या उछरे डूबे मन की मौज

मन ही फंसय्या मन ही पंछी मन ही दाना मन ही जाल
मन ही बचाये मन ही फंसाये सब से न्यारी मन की चाल

मन ही चिंता मन ही बिपता मन ही से अंधियारा होये
मन का छाला फूट बहे तो सगरे जग उजयारा होये

अम्रत का भर पूर खजाना विश का है यह रूख पुराना
यह भी मन है वह भी मन है एक अमर और एक दिवाना

मन ही में हैं राम झरोके मन ही में हैं ठाकुर द्वारे
मन के भीतर ज्योति उजीते मन के शिवाले घुप अंधियारे

मन की पहेली मन ही बूझे और न बूझे दूजा कोए
मन मूरख ही शीश नवाये मन चाहे तो पूजा होए

बाली ऋतु का भोला पन भी नई जवानी तीखा पन भी
उठते जोबन चंचल पन भी ढलते सूरज धुंदला पन भी

मन की हैं चित चोर निगाहें ढीट चतुर मुंह जोर निगाहें
मीठी सी रसमोर निगाहें इत चितवें उत बान चलायें

मन पोथी न स्वामी बांचे मन के रोग न बैदा जाने
मन की धीर धरे न कोई अब क्या होगा विधना जाने



* और चला चल थके मुसाफ़िर *

—:o:—

आँख से ओझल दूर है मंजिल ख़तरों से डर जाना क्या
काँटे तो भर पूर मिलेंगे छालों से घबराना क्या
नाहक़ में हलकान नहो अब दुवदे जी भटकाना क्या
बोझल पाओं उठा चल स्वामी रूख हरे ललचाना क्या
मुड़ मुड़ कर मत देख मुसाफिर ! पर बस जी ललचाना क्या
और चला चल थके मुसाफिर ! पल भर का ससताना क्या

राह कठिन और फिसलन भारी ना कोई संग सहारा है
चार दिना की ज्वानी दिवानी काहे को मतवारा है
पाओं तले की लीख न सूझे कहने को अंखियारा है
मन के बुझते दीप जलाले हृदय घुप अंधियारा है
पापी मन की ज्योति न जागी अप जागे इतराना क्या
और चला चल थके मुसाफिर ! पल भर का ससताना क्या

मन के शिवालये ढूंडने वाले मसजिद से बेजार मिलेंगे
मठ मँदिर के तोड़ने वाले टूटे मन के द्वार मिलेंगे
नाव किनारे खेवन हारे सागर के मंझधार मिलेंगे
बंधन सारे तोड़ दिवाने ! पगले पन में प्यार मिलेंगे
दिल का काँटा खीच न जाने ऐसों को अपनाना क्या
और चला चल थके मुसाफिर ! पल भर का ससताना क्या

अंधे मन में दीप मिलेंगे दीप बिना परवाने होंगे
पग पग तुझ को चमन मिलेंगे चमन चमन वीराने होंगे
सियाने सियाने बहुत मिलेंगे सियाने भी दीवाने होंगे
मंजिल मंजिल अपने मिलेंगे अपने वाँ बेगाने होंगे
मकड़ी के इस ताने बाने मूरख मन उलझाना क्या
और चला चल थके मुसाफिर ! पल भर का ससताना क्या

* किस की है आवाज़ *

—:o:—

दूर से मुझ को किसने पुकारा ?
कौन यह बोला पर्वत के उस पार
भोले भोले ममोले बोले या तुम बोले
गूंज उठा आकाश
चलता है या सांस का डोरा
सागर जैसे भंवर हिलोरा
उलझी उलझी आस
बीते दिनों की याद है कोई ?
टूटा सा या साज़ है कोई ?
धीरे धीरे देह में सारे भड़क उठी इक आग
देख तो ओ मधु माते हृदय !
कौन खड़ा है तेरे द्वारे ?

किस की है आवाज़ ?

कौन यह बोला प्यार की वाणी ? तड़प उठी मैं आधी रात

प्राणों की ज्वालायें फूटीं

पगले मन आशायें जागीं

धक धक जियारा हल चल डारे मचल उठी आँसू की धार

आकाश उड़ी

पाताल समाई

पवन बनी .... बदरा सी छाई

दशा दशा में ढूँड फिरी चित चोर

देख तो ओ मधु माते हृदय !

कौन खड़ा है तेरे द्वारे ?

किस की है आवाज़ ?



* भूका बालक *

—— :o: ——

चुटकी चुटकी आटा देदो * ताँबे का एक पैसा देदो
फटा पुराना कपड़ा देदो * रोटी का एक टुकड़ा देदो

राम नाम देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

तुमने ठंडी छाया ले ली * लौट पलट सब काया लेली
छाँट छाँट के माया ले ली * माया संग हर माया ले ली

राम नाम देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

भोले रूप सुन्दरता ले लो * बाली ऋतु की ललिता लेलो
चाहो तो कोमलता ले लो * माता पिता की ममता लेलो

राम नाम देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

फाँस सी दिल में चुभती होगी ※ आत्मा मेरी दुखती होगी
ज्योति दिये की बुझती होगी ※ देश की कैसे मुक्ती होगी

राम नान देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

आगया लप झप रेला पेला ※ बंगाले में काल का मेला
याद है वह भी कोऊ न झेला ※ झेलत हूँ मैं कब से अकेला

राम नाम देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

भारत को आज़ाद कराओ ※ कैद भरो या खून कराओ
चाहे जितने ढोंग रचाओ ※ देश से पहले काल मिटाओ

राम नाम देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

नेता और प्रधान बने तुम ※ स्वामी जी श्रीमान बेने तुम
धनमानों ! बलमान बने तुम ※ बोलो तो इंसास बने तुम

राम नाम देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

❋ ज्य चरखे की ❋

——:o:——

"देश पती जी" पुरया पूरें .... बापू कतें चरखा
अब देश में सिगरे धूम मची है चरखा कातो चरखा

चरखे का है कार स्वदेशी' माल स्वदेशी' तार स्वदेशी
कातन हारी नार स्वदेशी' ठेठ स्वदेशी चरखा

देश में सिगरे काल पड़ा है' हिन्दू मुसलिम जाल बिछा है
भारत तू जंजाल भरा है' कैसे कातूं ....चरखा

दिन भर सजनी ओनी ओनी' रात को चरखा पोनी
अब ओनी पोनी कुछ न होनी लप झप कातो चरखा

वह धुना बुनी में आये गये मोर स्वामी जी बौराये गये
जब इत उत से लठयाये गये तौ मोल ले आये चरखा

तुम ज्य बोलो चरखे की



❁ सुन्दर कठुराई ❁

———:o:———

इक नार अनेली' अलबेली' अति सुन्दर रूप' लटें लटकी
जीवन शीष झांके झिल मिल बदली' त्यों ओट लिये घूगंट पट की
कुछ मिहकी सी गति गातन' की अंग फूल खिले' कलयां चटकी
कर सायल नैनन तीर भरे' इतरात चले' बैहकी' भटकी
तीस हाथ की हाथ में लेज लिये और शीष धरे कोरी मटकी
अभिमान गुमान सोन जावत थी वह पंथ लिये धुर पंघट की
आकाश परी की झल कीसों' पाताल को जल परयाँ ठिटकी
पाताल में इक भूंचाल उठो' ज्यों जल में मटकी दे पटकी
मोरी पियास में और पियास उठी' कोई उमंड़ घुमंड़ त्रशना अटकी
नेक प्रेम जली से घूंट पिया ! मोरी अगनि बुझा हृदय तटकी
सिमटी' बहुरी' झिजकी' भड़की' वह दीख मोह मन में खटकी
फिर मोह के जार में फाँस मोहे' मन्नात भई घर को सटकी



* पंचों हाथों पिटा दिवाला *

——:o:——

ठौर न पूछो गाम न पूछो * मुझ से मेरा नाम न पूछो
कहाँ किया विश्राम न पूछो * तुम होगे बदनाम न पूछो

घाव पुराने छुऐ रसिंगे
मत छेड़ो यह फूट बहेंगे

राज महिल में हंसी खुशी थी * आजादी की धूम मची थी
देश की आशा हरी भरी थी * घर में मेरे आग लगी थी

सारे कष्ट सहार गई मैं
जीती बाजी हार गई मैं

दुष्टों के स्थान जहाँ थे * निरलज के सामान जहाँ थे
लाखों ही शैतान वहाँ थे * क्या जाने भगवान कहाँ थे

मात पिता कोई काम न आये
समय पड़ा तो राम न पाये

पंचों हाथों पिटा दिवाला * अपने घर मुंह होगया काला
दुष्ट ने कुछ न देखा भाला * खुले धड़े कुकर्म कर डाला

नंगों संग में नंगी घूमी
फाट गई ना भारत भूमी

घर फूँका अड़वाड़ न छोड़े * बाक़ी काठ कबाड़ न छोड़े
मात पिता के हाड़ न छोड़े * कोई नहीं जो पछाड़ न छोड़े

देह के टुकड़े आग में भूने
होगये कैसे धर्म के दूने

भारत के ओ पूत सपूतो ! * बगला भक्ती ! जंगली भूतो !
देश के ओ कमवख्त कपूतो! * अपने तुम करतूत तो देखो !

करके नँग धड़ंगो बेटी
देश निरेश ही करगये हेटी

मेरा कलंग अब कौन भरेगा * दूर यह धव्बे कौन करेगा
जीवन स्वार्थ कौन करेगा * स्वागत मेरा कौन करेगा

टूटा बासन बजे फ़टेरा
लेगा मुझ को कौन ठटेरा

स्वामी जी तुम भूल न जाना * अपने कर्मों फूल न जाना
तुम ने मेरा मूल न जाना * अंग लगा त्रशूल न जाना

भाड़ में जाओ नरक जलो तुम
चुल्लू जल में डूब मरो तुम



* दुख की अकथ कहानी *

——:o:——

जन्म के बैरी ! पापी नाथू ! * ओ ठगिया ! हतियारे नाथू !
परम ज्योति बुझादी नाथू ! * हत तेरे की तो पर थू थू

दुख सुख भोग के तोये जियायो * भर भर छतियन दूध पियायो
गाज पड़े तू कहा दिखायो * "देश पिता" संग बैर बिसायो

जावत थे बृला मिहलन कूं * राम भजन और हरि दर्शन कूं
सत मत सों हरि के पूजन कूं * फूंक दियो उस सत जीवन कूं

जीवन का ले प्रेम पजाया * हित चित " है राम " अलापा
देश के कारण तन मन तापा * भेंट चढ़ायो अपना बुढ़ापा

जन्ता दुख में तेरो कलपना * निस दिन रामई राम ही जपुना
हानि हुई ना कोई घटना * संग गई " है राम " की रटना

हिन्द के बाशी राज दुलारे * देश के तूने काज सुधारे
गुलमई बँधन तोड़ के सारे * खोल दिये आज़ादी द्वारे

नाव किनारे खेवन हारे * समिता राग अलापन हारे
वेद कुरान दोऊ बाँचन हारे * एकता रंग सचारन हारे

हर सुख और हर माया पाई * तुमने "राम मंडय्या" छाई
हर पूजन बैकुन्ठ बसाई * रहो निरक सो नाथू पाई

संसार ने तेरो सोग मनायो * मौत ने तेरी सब को रुलायो
स्वामी भी सुध बुध बिसरायो * टप टप अंसुआ नैन बहायो

राजा रोये प्रजा रोये * देश की सारी जन्ता रोये
हृदय लागी ममता रोये * टुस मुस भारत माता रोये

तेरा कवि इक कविता लाया * भेंट को तेरी मन हर लाया
ज्य हो गाँधी ज्य हर माया * करयो दाऊ हाथ की छाया



❀ शान्त संदेश ❀

—:o:—

जीवन का आदर्श पुराना ❀ धर्म पुराने ज्ञान पुराना
सुख का पुजारी सुख उपदेशक ❀ भोला सा इंसान पुराना
हम भी पुराने तुम भी पुराने ❀ हम सब का भगवान पुराना
एक पिता और एक ही माता ❀ यह भी है ईमान पुराना

प्रेम भाव से काटी हमने अबतक लाखों सदयाँ
आज हमारे लोहू की फिर क्यों बह निकालीं नदयाँ

आगे बढ़ कोई उत्तर दो * कोई फूटे मूंह से बोलो तो
फूट का रोग कहाँ से लाये * विश का छाला फोड़ो तो
डूबा कित वह शान्त ख़ज़ाना * सुख की माया ढूंडो तो
राम तुम्हारा भला करेंगे * गाँठ जतन की खोलो तो

छल चिन्ता की धुना सुनी में क्या क्या तुम नुक़सान करोगे
युद्ध की भयंकर ज्वाला में क्या भस्म श्री भगवान करोगे

धुंदली पड़गई ज्योति किरण की * डूब चुके आकाश के तारे
सत नीति की ओट बहाये * सिगरे जग लोहू के धारे
ऐटम के बल जंग करोगे * गुम हैं कैसे होश तुम्हारे
तुम से भी बलवान है कोई * लाठी जिसकी थके ना हारे

धन वालो ! हैवान हुये तुम बोलो कब इंसान बनोगे
साँच बतादो शैतानो ! क्या आगे चल भगवान बनोगे

——:o:——

कृषक बिनती

—:o:—

करके बेहड़ मेरी बाखर तुमने ऊंचे महल बनाये
जग मग मेरे दिये बुझा कर अपने घर के दीप जलाये
मेरे सुनिहरे खलयानों पर आड़े तिरछे दात्र लगाये
लूट ली निर्बल की आशा ऐसे तुमने जाल बिछाये

सूखे खाँकड़ हाड़ हैं मेरे लाल फुलरवा गाल तुम्हारे
देह के डींगर बालक मेरे लालों के हैं लाल तुम्हारे
भूक में हम इक कोर को तरसें घर में हों तरमाल तुम्हारे
अपनी कमाई आप लुटाकर होगये हम कंगाल तुम्हारे

जीवन के इस भौ सागर में बनके तुम्हारा खेवन हारा
अपना बेड़ा आप डुबोया तुम को मैं ने पार उतारा
अंधयारे से लम्बे पथ पर मैं ने तुम को दिया सहारा
जग के तुम अन्यदाता बाजे मुझी को तुमने भूका मारा

ईश्वर अल्ला राम तुम्हारे धन के बल भगवान तुम्हारे
धरती मेरी राज तुम्हारा साँचे हैं अभिमान तुम्हारे
निर्बल को ठग मूस के खुश हो कैसे हैं ईमान तुम्हारे
दुनिया कोई और बतादो जाये बसें यह किसान तुम्हारे

मेरे धन से मिलें बनायें भाँति भाँति की कलें लगायें
आप मैनेजर आप डारेक्टर आप ही जग दाता कहलायें
मेरी पैदावार से हिर फिर आप ही सारा लाभ उठायें
कड़वा कड़वा थू थू करके मीठा मीठा हप कर जायें

मेरे दम से राज सिंहासन मेरे बल से शोभा उसकी
मैं भारत का भारत मेरा मैं ने की है सेवा उसकी
तुम क्या जानो राम और ईश्वर तुम क्या जानो पूजा उसकी
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी खागई आश निराशा उसकी

जो सुख की नय्या खेवत हो वह नाव डुबो कर छोडूंगा
जिस लोहू तुम परवान चढ़े वह लोहू आज निचोडूंगा
तुम चूर हो अभिमानों में वह मान तुम्हारे तोडूंगा
सब कस बल तियारे देख लिये अब हर बल लेकर छोडूंगा



* स्वागत–पत्र *

——:o:——

इस भरी सभा में पूरी जी ! यह जीवन स्वागत करता है
नैन तुम्हारे दर्शन पाये' मन भी स्वागत करता है
धनी भी स्वागत करता है' निर्धन भी स्वागत करता है
भेस में अपने बन्दों के' भगवान भी स्वागत करता है

तू तारों की ज्योंति की धारा' तू ऊषा की उजली किरण
आ ! जीवन को स्वर्ग बनादे देश के ओं अनमोल रत्न

तुम भी धनी हो' मन भी धनी है' धनी बाप के पूत हो तुम
हृदय जो उजयारा करदे' माता के वह पूत हो तुम
माया संग हरि माया भी है' भरे पुरे इक पूत हो तुम
मादकता में जो ना डूबे' ऐसे पूत सपूत हो तुम

दुनिया मैं ने देखी है तू मेरी बातें झूट ना जान
माया शक्ती अजब नशा है' डूबे कोई ना हे भगवान

शक्ती के दो रूप हैं प्यारे ! इक गाँधी इक नाथू राम
इक लन्का' इक जनक पुरी है' इक रावण इक राजा राम
राक्षसों की रजधानी भी' कहीं कहीं पर हरि का नाम
मन चाहे तो सीता हर लो' या जपलो तुम रामई राम

शक्ती कोई बुरी नहीं है' बुरे भले हैं अपने काम
अपने कर हों धर्म रचो या भाड़ में डालो राम का नाम

माया के मधुशालों में किस धूम से होली होती है
भगवान की प्यारी बस्ती में शैतान की टोली होती है
बाजार में निर्धन बेटी पर नीलाम की बोली होती है
कुचली हुई इज्जत रोती है मसली हुई चोली होती है

हर जुल्म की टहनी फलती है हर सौदा यहाँ का सस्ता है
इस चम चम चाँदी के बल पर भगवान यहाँ पर बिकता है

इस माया की अति टेढ़ी गलयाँ गलियों में अति भूल भुलय्याँ
ठौर ठौर मोह जाल बिछा है बिच बिच हैं झिल मिलय्याँ
कहीं यह बाँटे पीर पराई किसी के घोंपे छुरियाँ
माया नेक भरोसा ना हैं खुली भी हैं और मुंदी भी अंखियाँ

आशा है यह पूरी जी! तुम ऐसे खेल न खेलोगे
देश की डग मग नय्या को पतवार से अपने खेलोगे

तुम जन्ता सेवा कर लेना' मत अपनी माया गंवाना तुम
कुछ देश पे भेंट चढ़ा देना' इस काम से मत घबराना तुम
तुम उज्वल हो' तुम निर्छल हो' नेक धाम से मुरझाना तुम
भगवान को अपने संग लेना हर बेड़ा पार लगाना तुम

मैं स्वामी तुम्हारा सेवक हूँ' धन माल का मुझको लोभ नहीं
बस प्रेम का तियारो भूका हूँ और हृदय कोई बोझ नहीं



* आकाश रंग *

—— :o: ——

धर्म आतम' पर्म आतम बदले * ऋषी' मुनी' अवतारी बदले
देश के सब नर नारी बदले * घर बदला' घर वाले बदले

क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाट पुराने बदले

मति बदली' मतवाले बदले * मधु बदला' मधुशाले बदले
हरि बदला' हरि वाले बदले * दुःख सुख न्यारे न्यारे बदले

क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाट पुराने बदले

अपनी राज सभायें बदलीं * सारी राम कथायें बदलीं
विस डूबी चिन्तायें बदलीं * पगले पन आशायें बदलीं

क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाट पुराने बदले

काहू मन ! संतोष नहीं है * दीप बुझे कुछ होश नहीं है
काँटों ही को दोष नहीं है * फूल भी अब निर्दोष नहीं है

क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाट पुराने बदले

भारत गोद से बालक छीने * कंन्या चीरी·········लोहू पीने
निर्दोषों के टुकड़े कीने * तिलक·····कलंकी माथे दीने

क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाट पुराने बदले

निर्धन हैं धनवान से उलझे * निर्बल हैं·····बलवान से उलझे
चातुर हैं·····नादान से उलझे * मूर्ख हैं·····भगवान से उलझे

क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाट पुराने बदले

मठ' मंदर' और ठाकुर द्वारे * मस्जिद' ग्रिजा और गुरद्वारे
काशी' प्राग और गुरुकुल द्वारे * शान्त नहीं अब यह हरि द्वारे

क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाट पुराने बदले

भूके को अन्न कौर मिले ना * रैन बसेरे ठौर मिले ना
बीत गया जो दौर मिले ना * तुम बिछड़े कोऊ और मिले ना

क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाट पुराने बदले

धुदंले धुदंले साँझ सकारे * गृहण में डूबे सूर्य हमारे
भले जी तुमने काज सुधारे * दिये तरे यह घुप अंधयारे

क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाट पुराने बदले

स्वामी जी ! सतनाम भले जी * स्वार्थ हों वह काम भले जी
मन में बिराजे श्याम भले जी * राम भले भई राम भले जी

क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाट पुराने बदले



* स्वामी जी की कुटया *

—:o:—

हर इल्म के दरया बहते हैं विद्वान यहीं पर मिलते हैं
सब ऋषियों की याँ छाया है इन्सान यहीं पर मिलते हैं
हर बहके भटके हृदय को ईमान यहीं पर मिलते हैं
याँ पल में मुक्ती होती है निर्वाण यहीं पर मिलते हैं

यह स्वामी जी की कुटया है
भगवान यहीं पर मिलते हैं

कुछ सुन्दर सा शुभ ठौर है यह याँ ज्ञानी ध्यानी बसते हैं
हर ज्ञान यहीं पर मिलता है हर मुख से फूल बरसते हैं
कोई आड़ी तिरछी राह नहीं सब सीधे सांचे रसते हैं
याँ सन्तों की सत सन्गत में हरि दर्शन भी अति सस्ते हैं

यह स्वामी जी की कुटया है
भगवान यहीं पर मिलते हैं

कुछ बोभी जा कुछ काट भीले इस जीवन का फल लेता चल
इक हाथ से अपने देता जा इक हाथ से अपने लेता चल
यह भक्तों का भन्डारा है तू झोली अपनी भरता चल
हर मौज में प्यारे बहता जा हर बूंद में सागर लेता चल

यहस्वामी जी की कुटया है
भगवान यहीं पर मिलते हैं

तू मस्जिद मन्दर बाँट चुका भगवान का मत बटवारा कर
हर आत्मा का पर्म आत्मा है जिस रुप मिले सो निहारा कर
तू छोड़ भी दे इन झगड़ों को मत अपना खेस खिसारा कर
हर फूल में वह त्रिशूल में वह जग रुप से मत छुटकारा कर

यह स्वामी जी की कुटया है
भगवान यहीं पर मिलते हैं

अति झल झल तेरे चोले हैं याँ देह पे साध लंगुटया है
तू शीष जटा में उलझा है याँ डाड़ी मूंछ न चुटया है
तेरे सागर हैं अभिमान भरे याँ प्रेम भरी इक लुटया है
संसार में तियारो सब कुछ है याँ हरि माया यह कुटिया है

यह स्वामी जी की कुटिया है
भगवान यहीं पर मिलते हैं



❁ फुर फुर उड़े तिरंगा ❁

——:o:——

अब अपने घर का राज मिला अब स्वर्ग बना यह देश अपना
सब छल चिन्ता अब दूर भई अब देश में है स्वराज्य अपना
अब जुल्म की टिहनी सूख गई अब शान्त हुआ हृदय अपना
अब प्रेम का सागर लिहर उठा अब प्रेम बना केवट अपना

अब जय हो भारत माता की अब फुर फुर उड़े तिरंगा

अब सूखे रुख हरयाली आई जागे भाग्य हमारे
अब खोई हुई आज़ादी पाई टूटे बन्धन सारे
अब हारी बाजी जीत गये यह जीत के हैं पौ बारे
सब हिल मिल कर ज्यकारे बोलो जीभ भरे चटखारे

अब जय हो भारत माता की अब फुर फुर उड़े तिरंगा

यह चक्र अशोकी अर्थ करे कुछ हिन्सा और अहिन्सा का
याँ राजा रानक नहीं अब कोई राज है सारी जन्ता का
अब हम सब मिल कर राज करें कुछ नियम करें माता जी का
तुम स्वामी जी प्रचार करो उपदेश है यह गांधी जी का

अब जय हो भारत माता की अब फुर फुर उड़े तिरंगा



* उड़यो पंछी धीरे धीरे *

——:c:——

धीरे धीरे उड़यो पंछी ! पिंजरे के वह द्वार खुले
एक उड़ान आकाश ना लीजो भय के हैं आसार खुले

परख भी लीजो अपनी शक्ती पंखों को तुम लीजो तोल
ऊंचा उड़ पाताल न गिरयो बात गिरेगी होगी ठटोल

हार न जाना जीती बाज़ी संग लगे हैं तियारे चोर
चम चम चोले रीझ न जाना कव्वे सियाने बने हैं मोर

मोर के मोर हैं चोर जियाले नैक में देंगे पंख मड़ोड़
किये धरे फिर कुछ न बनेगी लेंगे एक एक बूंद निचोड़

बंधे हुये पंखों को पंछी ! धीरे धीरे ज़ोर मिलेगा
त्यागेंगे जब ज़ोर घमंडी मंज़िल का तब छोर मिलेगा



❁ स्वपना ❁

——— :o: ———

स्वपनों ने नित रुप हैं धारे दुनिया है भगवान का स्वपना
मस्जिद मंदर स्वपनों के फल सवर्ग निरक इंसान का स्वपना
हर स्वपने में उलझा स्वपना अति उलझा हर ज्ञान का स्वपना
उलझी मत भगवान ना सुलझे जा से भला नादान का स्वपना

कोई ऋषी याँ कोई मुणी है कोई राम पुजारी है
काहू हृदय राम बसें ना कहने को अवतारी है

दुख भी स्वपना सुख भी स्वपना स्वपना हंसना रोना भी
एक तमाशा बज़ीगर का स्वपना बाल खिलौना भी
मन की अंधी आशाओं में अपनी नाव डुबोना भी
ऊले फूले पाप भी करना बैहती गंगा धोना भी

देखन को हर स्वपना मीठा चाखो तो अति खारी है
चिन्ता किन की दूर हुई और स्वपना कौन सखारी है

स्वपनों के इस रंग मिहिल में मैं समझी मोहे रहना है
दूजी और कोई जिल नाहें सुख सों अब यहीं जीना है
साँचा स्वर्ग यहीं दुनिया है बाक़ी खेल खिलौना है
दूर कहीं से कवि यह बोला अति खोटा यह सोना है

स्वपनों की यह मकर चाँदनी देती धोका भारी है
पूनों की उजयारी बीते मावस की अंधयारी है

महा बली रन सूर थे जितने ठेस से चकना चूर हूये
सूली चढ़ मंसूर बने कुछ राम से कोसों दूर हूये
जंगी थे काफ़ूर बने जो जीवन का नासूर हूये
निंद्रा के मदमाते जागो किस मादकता चूर हूये

स्वपनों की इस आँख मिचौली क्यों दुनिया मतवारी है
स्वपनों का व्यापार है झूटा घाटा इस में भारी है

लाखों सुन्दर स्वपने देखे आशा के उजयारों में
मुक्ती अपनी होती देखी स्वपनों के हरि द्वारों में
रस्ता घेर निराशा ठाड़ी घोर निरक अंधयारों में
भोर भये भी कोऊ ना जागो आग लगे मतवारों में

चातुर हारे सियाने हारे स्वपना बड़ा ज्वारी है
स्वपनों से ओ खेलन हारे ! अबके मात तियारी है

सौने की है लंका तेरी मुलकों में रजधानी है
रत्नों का है राज सिंहासन सैना भी मरदानी है
स्वपनों की यह शोभा मूर्ख ! काल कलाँ मुरझानी है
छोड़ के सारे स्वप्न अधूरे अंत में धूल रमानी है

माया स्वपना काया स्वपना स्वपन दुन्या सारी है
जीवन एक सुनहारा स्वपना हर स्वपने गति न्यारी है

जीवन का जो ताना बाना आज बुना कल टूटेगा
जो भी तुझको संगी साथी आज मिला कल छूटेगा
दयालू का भी कौन भरोसा आजदिया कल लूटेगा
अपने घरोंदे तू मत इतरा आज बना कल फूटेगा

स्वामी हाथन ईटं गला या किन कारण मेमारी है
जिस भूमी तू नीव जमावत वह तो आप रितारी है





* दिये तरे अंधयारे *

—:o:—

चलने से मत हार मुसाफ़िर चलते रहना काम है तेरा
अदभर में यह आलस कैसी दूर अभी तो गाम है तेरा
दरया के मत खोज किनारे तूफ़ानों में राम है तेरा
आप मुसाफ़िर आप ही मंज़िल मंज़िल दूजा नाम है तेरा

रस्तों के तू छोड़ दे झगड़े इन रस्तों आराम नहीं है
तुझ में साँचे राम हैं तियारे तुझ बिन कोई राम नहीं है

राह भी तेरी पाँओं भी तेरे पाँओं तले है मंज़िल तेरी
मन के दुबदे आज जो हारी फिर न मिलेगी मंज़िल तेरी
मुल्ला अपनी ओर पुकारे पंडित रोके मंज़िल तेरी
अपने अपने दाओ लगाकर खोटी करदी मंज़िल तेरी

क्रोध कपट के दोराहे में तेरा मुसाफ़िर काम भी बिगड़ा
मस्जिद मंदर के झगड़ों में इश्वर अल्ला नाम भी बिगड़ा

दुनिया सारी संग हो तेरे चाहे लाख सहारे हों
मंज़िल तेरी तभी मिलेगी पाओं जो तेरे सारे हों
सामने जिनके मंज़िल हो और वह मूर्ख जो हारे हों
सम्मुख जग मग दीप जरें और दिये तरे अंधयारे हों

कहाँ यह सुन्दर स्वपने ? टूटे कहाँ पे टूटी आस की डोर
कहाँ मुसाफ़िर डग मग हाला ? कहाँ पे होगये पाओं भी चोर

दीप की जग मग ज्योति सी है क्या? दीप की अगनी जलकर देख
जीवन सागर थाह कहाँ है ? तूफ़ानों में पल कर देख
मंज़िल तक जो चलना हो तो काँटों पर भी चलकर देख
पाओं से अपने चल भी मुसाफ़िर ! आँख से अपनी चल कर देख

फूटे भाग सुहाग मिले ना फूटे नैन न दर्शन होये
स्वामी झलकी मिले नहीं जब मैला मन का दर्पन होये

भय्यंकर आँधी रोक भी दे हर तूफ़ान का रुख़ मोड़ भी दे
जीवट ! अपनी मौत से पहले मौत की गरदन तोड़ भी दे
मंज़िल को मत छोड़ मुसाफ़िर ! भूल भुलय्याँ छोड़ भी दे
तेज़ नुकीले काँटों से इस पाओं के छाले फोड़ भी दे

लीख से बाहर पाओं न हों यां घात में बैठी मौत भी है
अपने हाथ के दाओ जो चूका मौत से पहले मौत भी है



* टके का यह मज़दूर *

—:o:—

कल तक था जो बोझ ज़मीं का दुर्बल और मजबूर
लछमी जिसकी जन्म की बैरिन राम भी कोसों दूर
जो था एक समाजी फोड़ा रिसता सा नासूर
आज ज़मीं पर राज उसी का वही अकेला सूर

मुलकों की तक़दीर पलटता आज वुही मज़दूर
.... टके का यह मज़दूर

चाँदी की भट्टी में जिसके लोहे के से हाड़ गले
जिसका ताज़ा लोहू पीकर सेठों के परिवार पले
आज उसी निर्बल की शक्ती पंचों के अगवार चले
सात पिढ़ी का नंग फकीरा लेकर सबका भार चले

बलवानों का वीर बना है आज वुही मज़दूर
.... टके का यह मज़दूर

हाथ में सोटा देह लंगोटा मन मुसकाता जाता है
तिरशूलों में फूल सा खिलता जग महकाता जाता है
एक नया सन्सार बसाता जादू करता जाता है
अपना फरेरा आप उड़ाता कोसों बढ़ता जाता है

मुक्ती मार्ग की ज्योति जगाता आज वुही मज़दूर
.... टके का यह मज़दूर

मानवता का पालन कर के शान्त किया दुखियारों को
बातन बातन जीत के छोड़ा धनवानों के भंडारों को
देदिया जिसने देश निकाला बाहर के बन्जारों को
कौन सा तूफ़ाँ रोकेगा इस तूफ़ाँ के मंझधारों को

सर देकर सरदार बना है आज वुही मज़दूर
.... टके का यह मज़दूर

इक दाता आकाश के ऊपर पदमों धरती वाले हैं
लाखों रोटी कपड़े वाले लाखों ही धन वाले हैं
राज काज भाग उन्हीं का वही सिंहासन वाले हैं
कौन है केवल मूंछों वाला कितने उनमें जियाले हैं

जियाला और नरेश भी है तो आज वुही मज़दूर
.... टके का यह मज़दूर

ऊंची है मज़दूर की शक्ति बात मिरी तुम मानो तो
बिन देखे भगवान को माना यह शक्ती पिहचानो तो
सूली पार अमरता मिली दाओ लगाना जानो तो
दर दर तुमने शीष नवाया यह घर भी पहचानो तो

अपनी क़िस्मत आप बनाता आज वुही मज़दूर
.... टके का यह मज़दूर





❁ मुसाफ़िर ख़ाने में ❁

—— :o: ——

यह दुनिया कितनी सियानी है हर सुलझी मत उलझाने में
मैं आप उलझता जाता हूँ इस गुत्थी के सुलझाने में
मैं आज के रावण पा लागूं ? या राम भजूं बुतख़ाने में
या ईश्वर के भी टूक करूं ? मैं अपना घर बटवाने में

ईमान भी चकना चूर हुआ मज़हब भी गया हरजाने में
इक पल का भी आराम नहीं दो दिन के मुसाफ़िर ख़ाने में

यह कैसी लौट पलट सी ही इंसान बदलता जाता है
इस दैरो हरम की राहों में ईमान बदलता जाता है
अन्याय की काली आँधी का तूफ़ान बदलता जाता है
यह सारी खुदाई क्या बदली भगवान बदलता जाता है

यह किसने आग लगादी है इस मस्जिद और बुतख़ाने में
इक पल का भी आराम नहीं दो दिन के मुसाफ़िर ख़ाने में

याँ प्रेम की सुन्दर भोर नहीं कोई भीनी भीनी शाम नहीं
सब क्रोध कपट के बन्दे हैं याँ उजले मन कोई चाम नहीं
यह धर्म के हिन्दू मुस्लिम हैं पर धर्म का कोई काम नहीं
शैतान के ओछे काम बड़े पर राम का कोई नाम नहीं

हर ज्ञानी थक कर हार गया इस जग को पार लगाने में
इक पल का भी आराम नहीं दो दिन के मुसाफ़िर खाने में

हर जिंस यहाँ पर मिलती है इन चोरों के बाज़ारों में
ईमान भी बेचा जाता है मज़हब के इजारे दारों में
याँ बंज में बेटी बिकती है इस मंडी के बंजारों में
इसमत भी खरीदी जाती है इस दुनिया के ज़रदारों में

इंसान ने क्या क्या रुप भरे इस तेरे अजायब खाने में
इक पल का भी आराम नहीं दो दिन के मसाफ़िर खाने में

मज़दूर की महनत फल ना सेके मज़दूर की है तक़दीर यही
सोने से दमकते बंगले हों ज़रदार की है तदबीर यही
भगवान पे लाखों दोष लगें भगवान की है तौक़ीर यही
ज़रदार के पापी हाथों से संसार की है तसवीर यही

क्यों देर भी और अंधेर भी है इस तेरे लंगर खाने में
इक पल का भी आराम नहीं दो दिन के मुसाफ़िर ख़ाने में

याँ घर के पियारे पूतों को बन बास सज़ा दी जाती है
रावण को सिंहासन मिलता है सीता से दग़ा की जाती है
हर रीत यहाँ की उलटी है उलटी ही दवा की जाती है
लुटते हैं मुसाफ़िर रस्ते में रहज़न को दुआ दी जाती है

महमिल का सहारा लैला को मजनूं की क़ज़ा वीराने में
इक पल का भी आराम नहीं दो दिन के मुसाफ़िर ख़ाने में

यह क्रोध की भयंकर ज्वाला तो संसार को सारे फूंक चुकी
पाताल के गुप अंधयारों में आकाश के तारे फूंक चुकी
सब राज दुलारे भस्म हुये यह देश के पियारे फूंक चुकी
इस घर में ऐसी आग लगी सब राम सहारे फूंक चुकी

अब स्वामी भी रिसियाते हैं सतनामों के दुहराने में
इक पल का भी आराम नहीं दो दिन के मुसाफ़िर खाने में





❀ ऐसे हैं हम लोग ❀

——:o:——

दुशमन की तलवार से काँपे * डालर की झँकार पे नाचें
उजले रूप और ओछी बातें * राम भजें और मन में घातें
मेरे देश की जन्ता ऐसी ऐसे हैं हम लोग

नगर नगर चतुराई देखी * घट घट में घटयाई देखी
मन में लाख बुराई देखी * घर की पीत पराई देखी
मेरे देश की जन्ता ऐसी ऐसे हैं हम लोग

चोर उचक्के रिश्वत ख़ोरे * वही सपूत और वही कमेरे
वही है राक्षस वही लुटेरे * वही कलंकी सुमरन फेरे
मेरे देश की जन्ता ऐसी ऐसे हैं हम लोग

आज़ादी का नाम नहीं है * स्वार्थ कोई काम नहीं है
चैन नहीं आराम नहीं है * बस में उनके राम नहीं है
मेरे देश की जन्ता ऐसी ऐसे हैं हम लोग

धर्मों का याँ एक बखेड़ा * रस्ता सब का टेढ़ा मेड़ा
कैसे पार लगे यह बेड़ा * नाच ना जाने आँगन टेढ़ा
मेरे देश की जन्ता ऐसी ऐसे हैं हम लोग

घर घर धर्म उपदेश करें वह * रैन अंधेरे पाप भरें वह
सत वंतों का नाश करें वह * अपनी ज्वाला आप भरें वह
मेरे देश की जन्ता ऐसी ऐसे हैं हम लोग

भाई ने भाई कटवा डाला * घर को अपने बटवा डाला
नाव खिवय्या मरवा डाला * नाम का डंका पिटवा डाला
मेरे देश की जन्ता ऐसी ऐसे हैं हम लोग

मन का रोग मिटे ना कोई * बिगड़ी बात बने ना कोई
साँच की आँच तपे ना कोई * हरि का नाम जपे ना कोई
मेरे देश की जन्ता ऐसी ऐसे हैं हम लोग

स्वामी जी में दया नहीं है * रोग यह कोई नया नहीं है
हंस हंस डसना गया नहीं है * बात गई पर हया नहीं है
मेरे देश की जन्ता ऐसी ऐसे हैं हम लोग

* राम फंसे जंजालों में *

——:o:——

मस्जिद सूनी मन्दिर वीराँ कोई घर आबाद नहीं
पँडित बेकल अपनी धुन में मुल्ला भी दिलशाद नहीं
अन जाना इक भेद बतादूँ बात यह बे बुनियाद नहीं
दोनों हैं जड़मूल से खुक्ल स्वर्ग की यां बुनियाद नहीं

उलटे सीधे शब्दों से तू उलटा सीधा काम ना ले
अपने आप को बिन पिहचाने राम का मूर्ख नाम ले

अपनी नय्या आप डुबो कर जग का खेवन हार न बन
मूर्ख पाप के दाग़ तो धोले जीवन का तू भार न बन
मस्तक ऊपर तिलक लगाया स्वर्ग का ठेके दार न बन
खुदी यह तेरी अल्लां अल्ला खुदा का लम्बर दार न बन

कर्म की घोर निराशा में तू मन को और उदास न कर
धर्म के सौदे हानि लगी है मुक्ती की तू आस न कर

मस्जिद भीतर अल्ला बँद और ईश्वर कैद शिवालों में
स्वर्ग पे क़बज़ा पंडित जी का जन्नत अल्ला वालों में
पड़ गई राम की ऐंचा तानी राम फंसे जंजालों में
शक्तीं के यह ठाठ भीं देखे मूरख धरती वालों में

कौन किसी का ईश्वर अल्ला कौन किसी का बंदा है
कौन यह ओछा फँदा डाले धर्म का झूटा धंदा है

ईमान की कच्ची पौनी को गो स्वामी हाथों बेच दिया
कुरआन को पीरो मुर्शिद ने तावीज़ बनाकर बेच दिया
कुछ आज बिका कुच काल बिका कुछ छूमंतर में बेच दिया
फिर सारी खुदाई घर रखली भगवान उठा कर बेच दिया

इंसान पुराना कोई नहीं अल्लाह पुराना बाक़ी है
सन्सार के इस परिवरतन में भगवान बदलना बाक़ी है



❀ स्वागत ❀

—:o:—

जमना नगर के बासी को मैं "सरस्वती" से लाया हूँ
गंगा तट पर दर्षन करने संगम लेकर आया हूँ
विजय जो तुमने प्राप्त की है उसकी वधाई लाया हूँ
हृदय के पट खोल के देखो स्वागत करने आया हूँ

जीवन की हर बाज़ी में हो जीत तुम्हारी पूरी जी
जय जय बोलो पूरी जी की जय हो तुम्हारी पूरी जी

सात समन्दर पार गये थे भारत लौट के आये हो
बंजारों की मंडी से तुम क्या क्या सौदा लाये हो
योरोप के विज्ञानों से क्या दुख की दवा भी लाये हो
साँच बता दो पूरी जी ! इस जीत में क्या हार आये हो ?

रोग वही आज़ार वही बीमार का हाले ज़ार वही
देश में हा हा कार मची है हम पे खुदा की मार वही

ऐटम बम ही ढलते हों जिस देश के उच्च विज्ञानों में
और बरछी भाले बिकते हों जिन शांत भरी दूकानों में
इंसान का खुदा भी इंसाँ हो जिस माया के भगवानों में
जो बेच के अपनी असमत सरदार बने इंसानों में

गोरे गोरे चाम के भीतर काले काले नाग वुही
बाहर बाहर रंग रगीले भीतर भीतर आग वुही

साँच बता दो पूरी जी ! क्या देश का यह ही हाल रहेगा
भारत की तक़दीर का चक्कर जारी सालहा साल रहेगा
लूट भी होगी क़तल भी होंगे आदमी यूँ पामाल रहेगा
जंता बिचारी भूकी मरेगी ? देश सदा कँगाल रहेगा

तुम से कुछ सहयोग मिले तो बेड़ा पार यह सारा हो
हृदय को जब शांत मिले तो वुह भगवान हमारा हो

छमा करो तुम पूरी जी ! मैं क्या जाने क्या बकता हूँ
अम्रत भी और विश भी हूँ मैं नित नित रुप बदलता हूँ
मन की चिंता बड़ी क्रोधी हँसते ही रो पड़ता हूँ
प्रेम के बंधन तोड़ न देना इस से मैं अति डरता हूँ

अपनी मदद हम आप करें श्रीमान से कह कर क्या होगा
हम बंदों ही से जब कुछ न हुआ भगवान से कहकर क्या होगा ?





❀ क्या खूब यह अंजाम है ❀

——:o:——

याँ धर्म हैं बदले हुये बदला हुआ धर्म आत्मा
धर्म आत्मा से दूर हम हम से जुदा धर्म आत्मा
घर में गले कटते हुये लुटती हुई हर आत्मा
कुचली हुई इंसानियत तहज़ीब का है खात्मा

संसार की यह दुर दिशा होती रहेगी कब तलक
हर जुल्म की टहनी युहीं फलती रहेगी कब तलक

इस ऐटमी संसार में उमडा हुआ तूफ़ान है
चलती हैं काली आँधियाँ मुट्ठी में सबकी जान है
ईमान है भटका हुआ बहका हुआ इंसान है
चक्कर में हैं दहरो हरम सहमा हुआ भगवान है

कितनी भली थीं इबतदा क्या खूब यह अंजाम है
धरती पे रावण राज है बदनाम लेकिन राम है

मुफ़लिस बिचारा ज़र्दरु बरबाद भी पामाल भी
भूका मरे नंगा फिरे फ़ाके ज़दा कंगाल भी
लेकिन तिलाई नाखुदा मिहलों में हैं खुशहाल भी
दिहक़ाँ के खूने गर्म से घर भर है माला माल भी

रिहबर हैं मंज़िल के वुही संसार के हैं नाखुदा
खुश क़िस्मतों को देखना ! बद क़िस्मतों के हैं खुदा

मुफ़लिस के दुखिया पेट को बेटी से मिलतीं रोटियाँ
करती फिरें मज़दूरियाँ बे मुंह की ये बेचारियाँ
मंडी में याँ नीलाम हों फ़ाक़ों की मारी देवियाँ
लानत है ऐसी क़ौम पर वेचें जो अपनी बीवियाँ

परदे में बियाही देख ली बेपरदा कुवारी देख ली
दुनिया ने अपनी आँख से बेटी की खुआरी देख ली

कितनी ज़मीं यह पस्त है यां आसमां अब भी तो हैं
इस जिंदगी के दोशपर बारे गिरां अब भी तो हैं
वह कारवां रहज़न अमीरे कारवां अब भी तो हैं
कितने बड़े बेमिहर हैं ना मिहरबां अब भी तो हैं

यूँ आदमी उलझा रहेगा कब तलक तक़दीर से
कब तलक तक़दीर को बांधोगे तुम जंजीर से

आता है यह जी में कि मैं इस खाकदां को फूंकदूं
और इस ज़मीं को फूंकदूं इस आसमां को फूंकदूं
फिर फूंक दूं इन रैहबरों को कारवां को फूंकदूं
और फूंक कर जिन्नों बशर सारे जहां को फूंकदूं

पैदा हो फिर दुनिया नई और फिर नया इंसान हो
और फिर हो इन्हीं शोलों से पैदा गर्मिये ईमान हो



* भगवान तो इनमें कोई नहीं *

——:o:——

पिघला हुआ है कुछ पारा सा * इन दल के दल परवानों में
जीवन का चकौता होता है * आज़ादी के दीवानों में
तू बेच रहा है अपने को * इन गले सड़े इंसानों में
क्यों शीष नवाता फ़िरता है * तू मैहलों के भगवानों में

ओ मूरख रे! मत घेर इन्हें इंसान तो इनमें कोई नहीं
दुनिया में खुदाई ख्वार हैं यह भगवान तो इनमें कोई नहीं

इज़्ज़त के तिरी व्यापारी हैं * इस देश के यह बंजारे हैं
जिन हाथों नय्या डूबी थी * वह तेरे खेवन हारे हैं
हर राजा बावन गज़ का है * बहरुप भी सब के नियारे हैं
कल जिनके वारे नियारे थे * आज उनके ही पौ बारे हैं

ओ मूरख रे! नादान न बन बलवान तो इनमें कोई नहीं
दुनिया में खुदाई ख्वार हैं यह भगवान तो इनमें कोई नहीं

तू सुख की पागल आस न कर * याँ दुख भी वधाई मिलते हैं
जिस दुष्ट के हाथ खुदाई हो * सब उसके फ़िदाई मिलते हैं
हर भाई का बैरी भाई है * अब दुशमन भाई मिलते हैं
बाहर के क़साई जा भी चुके * अब घर में क़साई मिलते हैं

ओ मूरख रे ! पहचान तो ले अनजान तो इनमें कोई नहीं
दुनिया में खुदाई ख्वार हैं यह भगवान तो इनमें कोई नहीं

यह देश के लमबरदार भो हैं * और क़ौम के हैं सरदार यही
निर्धन के लुहू से रंगीं हैं * बेटी के हैं साहूकार यही
और शान्त भरी इस दुनिया में * तूफ़ान यही मंझदार यही
यह दोनों किनारे घेरे हैं * इस पार यही उस पार यही

ओ मूरख रे ! मत पूज इन्हें रहमान तो इनमें कोई नहीं
दुनिया में खुदाई ख्वार हैं यह भगवान तो इनमें कोई नहीं



* जीवन की खोज में *

———:o:———

इक सोच में उलझा रहता हूँ पर सोच नहीं कुछ पाता हूँ
मैं ढूंड रहा हूँ जीवन को पर खोज नहीं कुछ पाता हूँ
है खोज मुझे इस जीवन की
जो निर्बल को बल देता हो
जो कुटिल कटीले काँटों पर
निर्भय हो कर चल देता हो

हर घाट पे हैं बट मार यहाँ हर घट पर धोका खाता हूँ
मैं ढूंड रहा हूँ जीवन को पर खोज नहीं कुछ पाता हूँ
यां पदमों पुरुष महान मिले
और संतों के संतान मिले
हर ज्ञानी से अति ज्ञान मिले
पर सब के सब अंजान मिले

जिस रुप मुझे भगवान मिलें वह रुप नहीं लिख पाता हूँ
मैं ढूंड रहा हूँ जीवन को पर खोज नहीं कुछ पाता हूँ

मैं जीवन की इस बाज़ी में
कुछ खो देता कुछ पाता हूँ
पर अब तक मुझे पाता नहीं
मैं क्या हारा क्या जीता हूँ
जो जीता था सो हार गया' अब हार में मारा जाता हूँ
मैं ढूंड रहा हूँ जीवन को पर खोज नहीं कुछ पाता हूँ

कुछ अपने मिले कुछ गैर मिले
कुछ खेवन हारे तैर मिले
कुछ तेरे हरम और दैर मिले
पर सब के भीतर बैर मिले
मत भेदों में अति भेद हैं यां' बिन भेद नहीं कुछ पाता हूँ
मैं ढूंड रहा हूँ जीवन को पर खोज नहीं कुछ पाता हूँ



* चलें बिदेश *

——:o:——

रुख की सूखी इक इक डाली * उजड़ी सारी रुप हरयाली
बाग़ की तेरे यह बद हाली * खून की छींटे खून की लाली
घाव पे घाव ठेस पे ठेस
चल रे पंछी चलें बिदेश

हिल मिल करली काना बाती * हंस हंस होली गुल गुल बाती
चांदनी होगई...राता राती * भोर भये वह दिया न बाती
अब तो मन को बड़ा कलेस
चल रे पंछी चलें बिदेश

डूबन लागे जग मग तारे * डग मग हालें पात बिचारे
बह गई नय्या जल थल धारे * धीर धरुं अब किन के सहारे
ऊजड़ नगरी ऊजड़ देश
चल रे पंछी चलें बिदेश

बाली ऋतु कोमलता खोई * मात पिता की ममता खोई
भोले रुप सुन्दरता खोई * घूंगट ओट मधुरता खोई
धूल की गठरी उजले भेस
चल रे पंछी चलें बिदेश



* चित चोर *

——:o:——

आय बिराजे मन के द्वारे * ले ले पलकन ओट सहारे
घुल मिल के लोहू के धारे * नीरस भय सब अंग तुम्हारे
तुम ही हो चित चोर हमारे * चंचल' ढीट' चतुर' मुंह जोर
स्वामी तुम ही हो चित चोर

करनी करके मत खिसयाओ * भोले साजन ! मत रिसयाओ
इत को देखो आंख मिलाओ * चीर के सीना मन दिखलाओ
बीती बतियां फिर तो सुनाओ * मीठी सी·········रस मोर
स्वामी तुम ही हो चित चोर

आस लगी थी तुम से झूटी * नैक सी बात में वह भी टूटी
साँची थी या झूटी मूटी * रंग महल की शोभा लूटी
गुप्त कथा यह सब में फूटी * मोरी अट्रियों नाचा मोर
स्वामी तुम ही हो चित चोर

तुम ने मेरा ध्यान लिया है * बर जोरी ईमान लिया है

लज्जा का सामान लिया है * अब तो मैं ने जान लिया है

जान लिया' पहचान लिया है * जुलमी' भस्मी' दुष्ट, कठोर

स्वामी तुम ही हो चित चोर

आओ स्वामी हिल मिल रोएँ * रोए रोए दोनों अंखियां खोएँ

खोटे रूप खरे न होएँ * सूखे रूख हरे न होएँ

अब न होएँ' तब न होएँ * रात बितारे होगई भोर

स्वामी तुम ही हो चित चोर





गीत माला

❀ गोरी पीसे पीसना ❀

——:o:——

धीरे धीरे चाले चाकी × मन धड़के और हाले चाकी
कुछ न देखे भाले चाकी × सब को पीसे डाले चाकी
चाकी पीसे पीसना
मोरी गोरी पीसे पीसना

यह न जाने रीत झमेला × कैसा बैरी और अनमेला
अपना पूत हो या सौतेला × घर घर पीसे रेला पेला
घुमुर घुमुर का पीसना
मोरी गोरी पीसे पीसना

निर्धन और धनवान न राखे × निर्बल और बलवान न राखे
सांचे की कुछ आन न राखे × काहू का अभिमान न राखे
बुरा भला सब पीसना
मोरी गोरी पीसे पीसना

सुन सुन री ओ पीसन हारी × कहा पड़ी है बिपता भारी
पीसत पीसत भई मतवारी × नेक न अफरी दुनिया सारो
जनम भरे का झीकना
मोरी गोरी पीसे पीसना

कौरा कौरा गलुआ मांगे × हाथ पसारे मनवा मांगे
चुटकी नंग फ़क़ीरा मांगे × भूका पेट विचारा मांगे
स्वामी का मुंह देखना
मोरी गोरी पीसे पीसना





❀ पिया पिया मत बोल ❀

——:०:——

ऐसी बोली बोल रे पंछी ! उर की लागी दूनी होये
जीवन के सब स्रोत खुलें और मन भूम में धूनी होये
भाड़ में डारूं इन शब्दों को नैक न बोलन दूंगी तोये
आग लगे इस जीभ को तेरी' राम करे यह गूंगी होये
पिया पिया मत बोल
कोई स्वागत बोली बोल पपीहे ! गति की बानी बोल

हृदय भीतर क्या बीतत है ?कहा बतावे भोली नार
कल्पे' तड़पे' ठुस मुस रोवे' रहे मसोसा मार
आह' कराह की सुन गुन पाके पेट में लेता डार
हे रे मूरख बावरे ! तू कूक फिरा सन्सार
पिया पिया मत बोल
कोई स्वागत बोली बोल पपीहे ! गति की बानी बोल

ऊंचा उड़ उड़ बादर फाड़े' इत उत डोले डांवा डोल
हिलकी मार के पंछी रोवे' टप टप अंसवा हैं अनमोल
ढकीं' छुपी सब रहने दे रे ! दबी लुकी मत खोल
छतयन लागी कोऊ न जाने' तू क्यों पीटत ढोल
पिया पिया मत बोल
कोई स्वागत बोली बोल पपीहे ! गति की बानी बोल

उत पत की यह भूल है पंछी ! घाव लगे अब कुछ न होये
काचे फल जब पाक गये तो चिन्ता किये अब कुछ न होये
होनी थी सो होगई प्यारे ! त्यारे मथे अब कुछ न होये
गया समय फिर हाथ न लागे हाथ मले अब कुछ न होये
पिया पिया मत बोल
कोई स्वागत बोली बोले पपीहे ! गति की बानी बोल
बोल बोल रे प्राण ! पपीहे गति की बानी बोल

——:o:——

❀ फूलन की ओढ़नयां ❀

———:o:———

दमक झलाझल ओढ़ लई मैं × धनक लहरया ओढ़ लई मैं
चमकत दामन ओढ़ लई मैं × चाँद सितारे ओढ़ लई मैं
अब न सोहे सजनी मोहे फूलन की ओढ़नयाँ

अंखयों में कजरा मोरे न सोहे × माथे पे बैंदी मोरे न सोहे
लाल महावर मोहे न सोहे × सोहे न सेंदुर' बिछवा न सोहे
अब न सोहे सजनी मोहे माथे की झुलनियाँ

दीपक की इक ज्योति थी घर में × आशाओं की सोत थी घर में
फूंक बुझी वह घर के घर में × रह गई धूल गठुरया घर में
भटकन लागी सजनी प्यारी ! स्वामी की मोहनयाँ
अब न सोहे सजनी मोहे फूलन की ओढ़नयाँ



* गजब भरी सासुलया मोरी *

—————:o:—————

बहकाये लियो ललना को अपने गजब भरी सासुलया मोरी
हंसती बिजुरी' बोलता जादू' घट घट में चतुराई
गोरे चाम चमकती नागिन' विस मधु में लहराई
पूरब गरजे' पच्छिम बरसे' चाल चले पुरवाई
अति के मीठे बोल में सासुल पाछे से कड़वाई
छंद्लाये लियो बलमा को मोरे गजब भरी सासुलया मोरी

पीहर छूटा' नाते टूटे' फूटे मोरे भाग
सासुल घर साँवलया छूटे दाग़ पे लागो दाग़
आप ही जमालो फूंस बटोरें' आप लगावें आग
चोर से कहदई चोरी करले' साह से कहदई जाग
रुलवाये दियो घुंगटा में मोहे गजब भरी सासुलया मोरी

साँचो साँची कहियो सासुल स्वामी तोर कि मोर
तोरी गोद का ललना बैरिन! मेरा है चित चोर
मात पिता अधभर के साथी' सास ससुर मुंह जोर
स्वामी बिना मोर जीवन नय्या कोऊ न खेवे और
दुबकाये लियो सजना को मोरे गजब भरी सासुलया मोरी
बहकाये लियो ललना को अपने गजब भरी सासुलय मोरी



❁ मन के दीप ❁

———:o:———

जब अम्बर छाओं घनेरी हो
जब मावस रैन अंधरी हो
जब मधु की लहर सुनिहरी हो
जब कुंज गली में फेरी हो

तब चुपके से तुम आजाना
तुम मन के दीप जला जाना

इस मन की आशा टूट न जाये
हाथ से दामन छूट न जाये
रैन अंधेरी डूब न जाये
राम करे पौ फूट न जाये

पलक धुंदलके आजाना
तुम मन के दीप जला जाना

रुक रुक कर ओ आने वाले
क़दम क़दम पर गिरने वाले
बहिक बहिक कर चलने वाले
फूट न जायें दिल के छाले

संभल संभल कर आजाना
तुम मन के दीप जला जाना

जब जग उजयारे बंद मिलें
जब राम सहारे बंद मिलें
जब मन के द्वारे बंद मिलें
जब रस्ते सारे बंद मिलें

तब पलकन ओट तुम आजाना
तुम मन के दीप जला जाना



* सुन्दर गलियां *

——:o:——

तेरी गलियों भूल भुलय्याँ * कौन गली से आऊं मैं
इन गलयों अवतारी आये
साधु बने गो स्वामी आये
चातुर' ज्ञानी' ध्यानी आये
डगमग डगमग सब चकराये
कैसे न घबराऊं मैं
तेरी गलियों भूल भुलय्याँ * कौन गली से आऊं मैं

पग पग बढ़ती' कर चतुराई
तेरी नगरी में भी आई
अप पे फूली' अति इतराई
सीधी साँची लीख न पाई
चुप चुप सी शरमाऊं मैं
तेरी गलियों भूल भुलय्याँ * कौन गली से आऊं मैं

ठंडी ठंडी छाया खोई
लौट पलट सब काया खोई
इन ही गलियों माया खोई
माया संग हर माया खोई
कैसे मुंह दिखलाऊं मैं
तेरी गलियों भूल भुलय्याँ * कौन गली से आऊं मैं

देह के सारे कस बल टूटे
चुट पुट रिशते नाते टूटे
इसी गली में प्रेमी छूटे
यहीं कहीं से स्वामी रुठे
किन को अब संग लाऊं मैं
तेरी गलियों भूल भुलय्याँ * कौन गली से आऊं मैं



❋ आये बसो भगवान ❋

—:o:—

मन में आये बसो भगवान

सागर ढूंढूं' पर्वत ढूंढूं' ढूंड मिले न मोय रहमान
"खाना खाली देयोमी गीरद" तुम बिन घेरत है शैतान
मन में आये बसो भगवान

अंखियाँ सूनी' हृदय सूनो' सूनो सूनो सब स्थान
दरस बिना में तुम को तरसूं' तुम बिन तुमको रटत प्राण
मन में आये बसो भगवान

ओघट रस्ता' घुप अंधयारी' जीवन बोझ समासम भारी
डग मग हाले निर्बल नारी' ज्योति उजीते घुप सुन्सान
मन में आये बसो भगवान

प्राणों की ज्वालायें फूटीं' संवर संवर तक़दीरें रुठीं
पगले मन आशायें टूटीं' तुम बिन टूटे सब अभिमान
मन में आये बसो भगवान



❁ कौन सुने तेरी कूक ❁

—:o:—

पापिन बरखा की रैन अँधेरी ❋ छाई घटा घनगोर घनेरी
तड़पत गरजत बदरा बैरी ❋ हूक उठत है कूक से तेरी
करिजवा के होवत टूक
बता मोहे कौन सुने तेरी कूक

कूक से तेरी ओ मतवारिन ❋ उभरत मोरी चोट पुरानी
घाव टहोके मत दे बैरिन ❋ मत कूके री ! चुप रह दिवानी
करिजवा के होवत टूक
बता मोहे कौन सुने तेरी कूक

जल में देख री ! आग लगत है ❋ पंचों बीच सुहाग लुटत है
सुन सुन री ! यह क्या करत है ❋ स्वामी बिछड़त तू कूकत है
करिजवा के होवत टूक
बता मोहे कौन सुने तेरी कूक



* भूकी कन्निया *

—:o:—

धर्म आतम घर घेरे डारी * पर्म आतम को जाये पुकारी
सब के आगे हाथ पसारी * धीर धरे ना कोई हमारी
राम नाम कुछ देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

भेंट चढ़ूं बलिहारी जाऊं * दोऊ कर जुड़याँ हा हा खाऊं
पेट के कारण देह बिकाऊं * हाये गजब ! मैं भीक न पाऊं
राम नाम कुछ देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

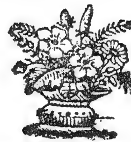
भूके को एक कौर मिले ना * रैन बसेरे ठोर मिले ना
मांगूं मोत तो मौत मिले ना * इस दुनिया में धीर मिले ना
राम नाम कुछ देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

जोर चले ठग मूस के खालूं * दुष्टों का मुंह नोच के खालूं
हाथ का कौरा छीन के खालूं * पेट की लागी आग बुझालूं
राम नाम कुछ देदो बाबा ! भूक लगी है भारी

चोर लगे हैं कहां समाऊं * ज्वानी को किस ओट बचाऊं
देह को अपनी कहां छुपाऊं * भूक अघोरिन कित दुबकाऊं
राम नाम कुछ देदो बाबा! भूक लगी है भारी

देह मिरी नीलाम न होगी * मुफ़्त में यूं बदनाम न होगी
दुख में रामई राम न होगी * कष्ट किये क्या शाम न होगी
राम नाम कुच देदो बाबा! भूक लगी है भारी

भूक को मैं बैहलाती जाऊं * बातों में फुसलाती जाऊं
दुनिया को ठुकराती जाऊं * मरन घड़ी इतराती जाऊं
राम नाम कुछ देदो बाबा! भूक लगी है भारी





※ सौ की मारी एक दिवानी ※

—————:o:—————

लाल ततय्या सासुल मोरी' कभऊ में वासे ना बितयाती
बैरिन् हाथों तीर कमनिया' चुट पुट' इत से उत कर जाती
बूढ़े चौंडे अजब खिलाड़न' दूध छटी का याद दिलाती
घाव टहोके मत दे बैरिन! पीर से फाटत मोरी छाती

सौ की मारी एक दिवानी' टुस मुस टुस मुस रोवत जाती
सास ननद मोहे बोलने बोले' गय्या सी थर्राती

घूंगट पट की लाज लगाये' चार दिना भये सासुरे आये
नन्दुल बैरिन बोलने बोले' धर धर सासुल दांत चबाये
जेठी ननदया बड़ी दिवानी' कंसुये ले ले रार मचाये
आवे का आगा ऐसा बिगड़ा कोऊ न मेरी धीर बंधाये

सौ की मारी एक दिवानी' टुस मुस टुस मुस रोवत जाती
सास ननद मोहे बोलने बोले' गय्या सी थर्राती

सास बहू की अजब कहानी' जिस घर देखो एक सी बानी
सासुल मोरी घाग पुरानी' नन्दुल पापन दुशमन जानी
किसी के स्वामी छीन के मानी' किसी का लोहू चूस के मानी
बड़ी कठिन है यह रजधानी' सासुल काटी मांगे न पानी

सौ की मारी एक दिवानी' डुस मुस डुस मुस रोवत जाती
सास ननद मोहे बोलने बोले गय्या सी थरांती





❋ तुम ना आये ❋

——:o:——

मोरे सजनवा तुम ना आये ❋ बरखा आई' सवन्वा आये

घिर घिर कारी बदरयां आईं

पपीहे आये' कुयलयां आईं

सखयां आईं' सहिलयां आईं

पिया मिलन की रतयां आईं

सय्यां भी आये' गुसय्या भी आये

मोरे सजन्वा तुम ना आये ❋ बरखा आई' सवन्वा आये

हरी हरी डार ममोला बोले

मोरे मंगरवा कागा बोले

पंछी बोले' पखेरू बोले

गोरी अकेली का मन ना बोले

देसी भी आये' बिदेसी भी आये

मोरे सजन्वा तुम ना आये ❋ बरखा आई' सवन्वा आये

बेले रसीले पे भौंरा लागे
तितली नाचे' भिंगरवा लागे
नैनन पियारे करिजवा लागे
गोरी अकेली का मन ना लागे

सियाने भी आये' दिवाने भी आये
मोरे सजन्वा तुम ना आये ❋ बरखा आई' सवन्वा आये

झिल मिल रुप गुदारी सी बांहें
लाल गुलाबी का मधु बरसायें
हिल मिल झूलें मल्हारें गायें
सूनी सूनी सेजों पे हम घबरायें

झुलने भी आये' हिन्डोले भी आये
मोरे सजन्वा तुम ना आये ❋ बरखा आई' सवन्वा आये



❁ स्वामी सहारा ❁

—:o:—

टूटी नय्या' भंवर थपेड़े × उलटी चलत ब्यार
माँझी मेरो अति मतवारो × खेवत नय्या बिन पतवार
दीजो स्वामी नेक सहारा
डूबी जात अभागिन नार

खेवत खेवत दिन भी डूबो × छेओं दिशा भये घुप अंधकार
भव सागर में फिरूं अकेली × सूझत अंधरी वार न पार
दीजो स्वामी नेक सहारा
डूबी जात अभागिन नार

काल चक्र की देख तरंगें × टूट गई आशा उपकार
कर्म पवन की चकफेरी में × पहुँच न पाऊं मैं उसपार
दीजो स्वामी नेक सहारा
डूबी जात अभागिन नार

लाख जतन कर हारी बिचारी × घिर गओ जीवन बिच मंझधार
डूबत' उछलत पार न जावत × हिर फिर लागी जीत में हार
दीजो स्वामी नेक सहारा
डूबी जात अभागिन नार



❀ बेड़ा पार लगे तो कैसे ❀

———:o:———

तीर्थ कहीं' अशनान कहीं है
ध्यान कहीं' ईमान कहीं है
वह है कहीं' स्थान कहीं है
मैं हूँ कहीं' भगवान कहीं है..............हरि का द्वार मिले तो कैसे
मन मेरा मंझदार फंसा है' बेड़ा पार लगे तो कैसे

अंधे जीवन दीप मिले ना
दीप में बाती तेल मिले ना
भयांकर आंधी नेक लचे ना
मन में कोई ज्योति जगे ना..............दीप उजयार मिले तो कैसे
मन मेरा मंझदार फंसा है' बेड़ा पार लगे तो कैसे

रस्ता छोड़ कुरस्ता भटकूं
सुलझे मन मैं हरि से उलझूं
माया मोह के जार में अटकूं
स्वामी जी के प्यार से खटकूं..............जग का प्यार मिले तो कैसे
मन मेरा मंझदार फंसा है' बेड़ा पार लगे तो कैसे



"धोबिन का गीत"

——:o:——

हरि ही माया हरि ही दाम * कैसा पैसा और छदाम
राम भरोसे मन को थाम * हरि ही बनाये बिगड़े काम
चारों खोंट है एक ही नाम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

बाँधी लादी लादा बैल * धोने चली हूँ मैल कुचैल
कर्मन लिख दई धोब की टैल * चलरे नादिया अपनी गैल
पेट कराये क्या क्या काम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

भीगी भीगी काली रतियाँ * जगर मगर आकाश तरैयाँ
ठंडे जल की ताल तलैयाँ * गीले कपड़े गोरी बहियाँ
रोज़ यही है अपना काम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

बाहर का संसार नया है * मंडी नई बाज़ार नया है
संगत का व्यापार नया है * प्रीत नई है रार नया है
सांचा अपना पुराना काम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

अजगर अजगर सेठ सिठानी * राजों के राजा महलों की रानी
लाखों सियाने पद्मों ज्ञानी * सब की देखी उलटी बानी
शुद्ध करे सो राम का नाम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

मन्दर मन्दर बैठे पुजारी * धर्म आश्रम में रामा धारी
द्वारे द्वारे प्रेम भिकारी * एक ही बन के सब हैं शिकारी
मन में पाप और मुंह पर राम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

मोहनी मूरत छैल छबीले * आँख में जादू हौंट रसीले
बांके, तिरछे, रंग रंगीले * दामन सब के दाग दगीले
उज्जल करना अपना काम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

घूंगट पट में लाज नहीं है * पतिवर्ता का राज नहीं है
कल की शोभा आज नहीं है * मूल नहीं है ब्याज नहीं है
जिन परखो वह खोटे दाम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

मोती की सी आब उतारें * रस चूसें और पाप उछारें
सुथरे पर यह दाग उभारें * उज्जल पर यह धब्बे डारें
इन को धोना अपना काम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

सुन्दर रुपी भोले भोले * तितली के से जिन के चोले
रस के बदले विष हैं घोले * बेटी ऐब न मैया खोले
कंवारी ब्याही सब बदनाम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

मधुर मधुर से उठते जोबन * लहर लहर से बढ़ते जीवन
सब के देखे एक से लच्छन * मैली चोली मसले दामन
इनसे अच्छे बाँद गुलाम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

अपना भोजन फीका सीठा * और के घर मीठा मीठा
शुद्ध परोसा अथवा रीठा * झूटे पत्तल सब कोई चीखा
ऊंचे नामों ओछे काम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

अनगैरी की सीख न लीजो * अपनी पुरानी लीख न दीजो
प्रेम की पूंजी भीख न दीजो * पति पूजन में झीख न कीजो
मन के शिवाले बैठा श्याम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम

गंदी उसासों बचती रहना * धर्म कर्म में सजती रहना
साँच की आँच में तपती रहना * ईश्वर माला जपती रहना
स्वामी मिले तो कर प्रनाम * भजले सजनी ! हरि का नाम
छीयो राम···छीयो राम






क़तआत

❋ नई शक्ती नया भगवान ❋

——:o:——

आज के सारे स्वपन नये' इंसान नया' अभिमान नया
यहां पे भारत वर्ष नया है' वहाँ है पाकिस्तान नया

नये नये अधिकार तुम्हारे' हर हर देश विधान नया
शक्ति तुम्हारी तब हम जाने' लाओ जब भगवान नया

❋ मा की मौत पर ❋

——:o:——

माँझी भी वहीं था साहिल पर दुनिया के सभी इंसान भी थे
पर डूबने वाला डूब गया' कहने को वहीं भगवान भी थे



❋ एक प्रार्थना ❋

———:o:———

तुम को भगवान की सुगंद है रहज़न न बनो
तुम क़साई न बनो' आत्मा दुशमन न बनो

देश की ऐक्ता चाहो तो तुम अपने घर में
भाई के भाई बनो' देश के रावण न बनो



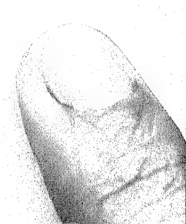
* नये चिराग़ पुराना अंधेरा *

———:o:———

नया समय है' नया है दिवस' नया सवेरा है
नया विधान' नया क़ौम का फरेरा है

नये चिराग़ से फूटी हुई है ज्योति नई
हमारे भाग—————अभी तक वुही अंधेरा है





❀ दो रंगी ममता ❀

——:o:——

सुन सुन री ओ भारत माता ! तू क्यों जनमी पूत कपूत
कोख में तेरी ओ मतवारिन ! कहां से आये छूत अछूत

छल खेलत तोहि लाज न आई घर अंगना यह दो रंगी
गोरे गोरे ठाकुर बमना' काले काले सब भंगी

वाह रे तेरी ममता माता ! वाह रे तेरी आदर बात
काहू काहू कच्ची कच्ची' काहू दूध' मलीदा' भात



❀ जात रोग ❀

——:o:——

काहू संग' सत संग न लागे' ऐसी जात कुसंगी हूँ
देह घिनौनी' रुप घिनौना' पंचों बिच सर भंगी हूँ

चाखे को जब मन ललचाबे' रंगी सी नारंगी हूँ
छू मत लेना स्वामी मुझको दूर रहो में भंगी हूँ



"औरत"

❋ एक बिकाऊ माल ❋

———:०:———

कोई कहत तो अत की मदी' कोई कहत अन मोल
साँची साँची कहदे सुन्दरी ! क्या है तेरा मोल

कितने में तेरी देह बिकेगी' किन दामों तेरी लाज
छल लेहूँ तेरे गात सगनये बन जावें सब काज



❀ एक उत्तर ❀

——:o:——

ना तो हूँ मैं अति की मदी' ना हूँ मैं अन मोल
सांची सांची कहदूं स्वामी ! क्या है मेरा मोल

रोटी के बदले देह बगेगी' प्रेम में मोरी लाज
रोटी और प्रेम का समबन्ध हो तो बन आवें सब काज




दोहे

❁ नौ--रत्न ❁

—:o:—

अगनी पूजें' पत्थर पूजें' कोई पूजे पीपर
स्वामी बिचारा तुम को पूजे' तुम हो सब के भीतर

पापी नयना बिधना जाने' बैरी हैं कि चोर ?
आप ही दहीयर आग लगावें' आप मचावत शोर

मूरख वैदा नारी देखे' बमना बांचे पोथी
हृदय बीती कोऊ न जाने' विद्या सब की थोथी

नैनन रोग अजीरन लागो' हृदय लागी फाँस
रोवत बिलकत नायें बने री! लाज की लागी धाँस

मन ही चिन्ता' मन ही बिपता' मन ही से अंधयार होये
मन का छाला फूट बहे तो सगरे जग उजयारा होये

❋ दोहे ❋

——:o:——

प्रेम का दीवा प्रेम की बाती प्रेम का लागो तेल
प्रेम की अगनी प्रेमी फूंके' प्रेम का देखो खेल

स्वामी झलक देखियां सो रोवत हैं यह नैन
हृदय मूरख किन लिखो सो तड़पत है दिन रैन

यह निर्मल जीवन फूंकियो या विश ही पीजियो घोल
या स्वमी बीती सीखियो तो प्रीत न लीजियो मोल

संग कुसंग को संग न लागे' लागे होये कुसंग
तखरी के अनमेली पलड़े' डांड़ी दोश लगे पासंग

रुम रुम अंस रचो है जीव जीव में साईं'
पाला' ओला' बादरा' सब जल की है परछाईं'



भंवर घनेरी रैन अंधेरी' आस की हिलती डोर
धीरे धीरे आरी निंदया ! संग गली है भोर

अरे बावरे मधुमाते हृदय ! अब तो मूरख जाग
देख तो उठ के किस बैरी ने' घर में देदई आग

पिया पिया की सुमरन हो या पीहू पीहू की कूक
अपनी अपनी अगनि है यह अपनी अपनी हूक

घूंगट ओट करुं मैं कित लंग किन को लेहूँ थाम
इक लंग मोरे प्रीतम ठाड़े' इक लंग ठाड़े राम



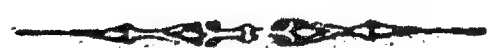
मूरख' चतुरा' ज्ञानी' ध्यानी या हो ज़ात कुज़ात
एक ही रुख की है फुलवारी एक ही विरवा चिकने पात

काया से हर माया गई तो काया रहो क्या जोर
चाहे दारी चिता चढ़ाओ चाहे गाड़ो गोर

लाखों जन्ता छीज गई और देश बटो जिस साल
कठिनाई से स्वामी काटे पूरे पचपन साल

माटी की इस काया भीतर बस में करके प्रिान
हम को तुम ने मनुष्य बनाया' आप बने भगवान

एक कुटम में रहत हैं' एक ठाओं' एक प्रीत
अब इकले इकले जात हो' सो कों गाओं की रीत



पहेलियाँ

* पहेलियां *

———:o:———

(बहिन)

एक मां बाप के दो हैं बच्चे * नाम है उन का अलिफ़ और बे
अलिफ़ है प्यारा भाई बे का * लेकिन नहीं है भाई बे
मूरख स्वामी बूझ न जाने * तुम ही बताओ कौन है बे

(लौंग)

एक नाम की देखीं हमने ऐसी दो सहेली
एक को पहने' एक को खायें बता पहेली मेरी

(शरीफ़ा)

गोल मोल सा एक मकान * जिस के भीतर दो महमान
एक है गोरा एक है काला * सुनो शरीफ़ों की पहचान
चट कर जायें सब गौरे को * थू थू हो काला महमान
बूझो स्वामी मेरी पहेली * मुशकिल होगई अब आसान

(किताब)

इक नार के मास न हड्डी * चीके चीके पात की गड्डी
अपना लेखा बांच न जाने * औरे पढ़ावे आप कुबड्डी

(पान)

खाने में पचरंगी चटनी हम ने एसी खाई
पांच से वह रंग एक बना क्यों क्या चीज़ ऐसी खाई

(दिया सलाई)

जेल से बाहर जिसको निकाला * सींक सलाई' मुंह में ज्वाला
क्या कहें स्वामी हज़रते बाल * आग लगाती आई खाला

(महीना-दिन-साल)

इस दुनिया में बारा जाट * तीस मार खां' मुलकी लाट
लौट पलट में जुगें सी बीतें * दाओ घात में तीन सौ साट
जो ना बूझे मेरी पहेली * कर दो उसका बाई काट

(रुपया-पैसा)

सुनो भई स्वामी एक हवाल * देश के हैं इक लमबर दार
उनके उजले रंग मिहल में * सौ सौ पट का इक इक द्वार
बूझो स्वामी मेरी पहेली * जो ना जाने बड़ा गंवार

(छाली)

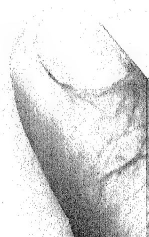
गोल मोल सा काठ का उल्लू * खट खट काटे नैक सा टिल्लू
जो आये सो दांत चबाये * फुर फुर थूकें मियाँ बुढ़ल्लू

(बादाम)

बाद — हवा है' अंम्बा — आम
धड़ काटो हो पूरा नाम

(दामाद)

उलटा' सीधा' हिर फिर लिक्खो हरफों बना "जंवाई" है
अर्थ किये तू आप समझ ले' नाहक़ अक़ल गंवाई है



(ताला)

लोह बदन का सूरमा द्वारे पहरादेह
ठग ना मू' से कोठरी चोर न माया लेह

(चांद—सूरज)

बड़े बड़े दो हाथी रोट * इक ठंडा' इक गर्म है रोट
धरे हैं नीले थाल में दोनों * इक दिन का' इक रात का रोट
कौन गुनी यह रोट पकाये * जिन में कोई कसर न खोट
जगमग' जगमग ज्योति सी फूटे * मुख पर कोई आड़ न ओट
सियाने हों सो नाओ बतायें * गधे गधों की बाँधो जोट

(नाक)

सारे घर से ऊंचा कोठा, कोठा में दो मोरी
कान पकड़ के उलटा करदो सीधी होगी पहैली मोरी



उर्दू नज़्में व क़तआत

* एक अहतजाज *

———— :o: ————

वुह फलसफ़ीये पीरे खुदी, हाहिबे इदराक
जो "बन्दये नादां" भी था और नाक़ का इक़बाल

जिस ने कि दिया दरस था मोमिन को खुदी का
"यज़दां बकमंद" करने को फैलाये बहुत जाल

अल्लाह की मर्जी ना मशीयत रही बाक़ी
बन्दे की रज़ा जिस पे मुक़द्दम थी' बहरहाल

था जिस का "निहां खानये लाहोत से पैवन्द"
पैवन्दे ज़मीं होके रहा आज वुह इक़बाल

मर्क़द में लिये सोता है वुह अपनी खुदी को
बाक़ी है खुदां और खुदा का वही अजलाल



❋ घर के पीरों से ख़िताब ❋

—:o:—

ऐ पीरज़ादो' मुरशदो ! ऐ मज़हबी सौदागरो !
ऐ अहले बैते मुहतरम ! ऐ गुमरहों के रहबरो !
आली नसब' वाला हसब' मुशकिलकुशा' चारागरो !
जादूगरी में ताक़ हो' शाबाश ऐ बाज़ीगरो !
तुम साहिबे सज्जादाह हो' रुही फ़िदाक या अख़ी
जन्नत तुमहारी मिलक है' बाक़ी रहे सो दोज़ख़ी

कितना करम है आप का' कितनी इनायात आप की
कुछ आप भी सुन लीजिये जो हैं रवायात आप की
जिन्दा पुजें' मुर्दा पुजें' यह है करामात आप की
दोनों जहां भी आप के' सारी फ़ुतूहात आप की
अल्लाह का भी आप पर कितना बड़ा एहसान है
पकवान फीका तक नहीं' चलती मगर दूकान है

शरई महासन आप के और यह मुक़द्दस दाढ़ियां
नामे नबी विरदे ज़ुबां' पुर नूर यह पेशानियां
पाकिये दामन इसक़दर' लेकिन बग़ल में क्वारियां
पीरे शरीअत ! सच कहो' कबतक यह बद अतवारियां

तुम रांदहे दरगाह हो' दरगाह की मारें पड़ें
तुम पर खुदा की मार हो' अल्लाह की मारें पड़ें

अबबा की हड्डी बेच कर अंधों की अंटी खोल ली
गिरते हुये बाज़ार की हर जिंस तुम ने तोल ली
तुम इस क़दर सफ़्फ़ाक हो' दुनिया की दोलत रोल ली
फिर भाड़ में झोंका खुदा' सारी खुदाई मोल ली

सिर्फ़ आप के कशकोल की रोटी में देखा यह कमाल
जितनी बेग़ैरत कमाई' इतनी वह अकले हलाल



❁ प्रदर्शनी ❁

——:o:——

यह दो दिन के मेले का बाज़ार देखो * नुमायश की शौकत का तूमार देखो
नमूने की जिंसों का अंमबार देखो * यह तगड़ा है गन्ना' वुह बीमार देखो
ना मस्जिद' ना मन्दर' ना हरि दर्शनी है
तुम आकर तो देखो ! यह प्रदर्शनी है

नुमायश के बंदे नुमायश की बातें * यह धोके की टट्टी' दिखावे की बातें
ग़रीबों के आगे' अमीरों की बातें * हैं गन्ने से रस चूसने को यह घातें
तुम्हारे ही कारण यह गाढ़ी छनी है
तुम आकर तो देखो ! यह प्रदर्शनी है

खुदा की ज़मीं पर यह क़बजे तुम्हारे * मिरी महनतों के हैं फल भी तुम्हारे
यह रोटी के टुकड़ों पे झगड़े तुम्हारे * यह चांदी के सिक्कों पे सिजदे तुम्हारे
यह पाकीए दामन कि तर दामनी है
तुम आकर तो देखो ! यह प्रदर्शनी है

निरे कष्ट झेलो' बहुत दुख उठाओ * निचोड़ो लहू' खाद उसका बनाओ
यही योजना है बहुत सा उगाओ * मगर अपने बच्चों को भूका सुलाओ
पिता जी हों दुखिया कि मां अनमनी है
तुम आकर तो देखो ! यह प्रदर्शनी है

ना धर्म आत्मा है' ना भगवान कोई * वुह ना मिहरबां है तो शैतान कोई
नहीं है किसानों में धनवान कोई * तो लाये कहां से यह सामान कोई
खुली दोस्ती है' छुपी दुशमनी है
तुम आकर तो देखो ! यह प्रदर्शनी है

घुला करके जानों को दिन रात अपनी* मिला करके मिटट्टी में औक़ात अपनी
रहे नज्र हम करते सौगात अपनी * बिगड़ती गई फिर भी हर बात अपनी
ना दुशमन पे टूटे जो हम पर बनी है
तुम आकर तो देखो ! यह प्रदर्शनी है

यह झूटे खिलौने न खेलो तो बिहतर * वुह बिखरे हैं मोती उठालो तो बहतर
मुहब्बत की खुशबू से महको तो बहतर* जो सोने को कुदंन बनालो तो बहतर
तुम्हारे ही कारण यह गाड़ी छनी है
तुम आकर तो देखो ! यह प्रदर्शनी है

किसानों की जानें बचालो तो जानें * भंवर से यह किशती निकालो तो जानें
कलेजे से अपने लगालो तो जानें * तुम अपना सा इनको बनालो तो जानें
यह निर्धन हैं' इन में न कोई धनी है
तुम आकर तो देखो ! यह प्रदर्शनी है

ग़रीबो ! किसी की सुना भी करो तुम * उठो कुछ तो अपना भला भी करो तुम
जिहालत को यकसर फ़ना भी करो तुम* दुआ होचुकी अब दवा भी करो तुम
जो फुंसी थी पहले सो फोड़ा बनी है
तुम आकर तो देखो ! यह प्रदर्शनी है





* अपने नाखुदा से *

——:o:——

चमन उदास उदास है' गुलों में रंगो बू नहीं
लहू का क्या गिला करूं ? रगों में भी लहू नहीं
वह जोशो वलवले नहीं' खुशी की गुफ़तगू नहीं
बता ! मैं जी के क्या करूं ? कि ज़िंदगी में तू नहीं

मिरी हयात लेगया, बक़ा भी साथ लेगया
वह ज़िंदगी का नाखुदा, खुदा भी साथ लेगया

मिरे वतन का आफ़ताब इस आसमां से दूर है
कि आह ! वुह मकीने दिल भी इस मकां से दूर है
वह ग़म नसीब क्या करे ! जो दो जहां से दूर है
कि अर्शो फ़र्श का खुदा, मिरी फ़ुगां से दूर है

वह तूरो मूसा अब कहां ? असा भी साथ लेगया
वह ज़िंदगी का नाखुदा, खुदा भी साथ लेगया

न शेरो नग़मा है कहीं, न मसतिये शबाब है
न इश्क़ का वुह दौर है, न दौर में शराब है
जुनूं है दिल का हाल भी कि ग़म भी बे हिसाब है
यह ज़िंदगी है ऐ खुदा! कि मुस्तक़िल अज़ाब है

अरे बड़ा ग़ज़ब किया, वफ़ा भी साथ लेगया
वुह ज़िंदगी का नाखुदा, खुदा भी साथ लेगया

वुह तेरा क़ुरबे जाँ फ़िज़ा, वुह चांद रात क्या हुई
मैं कब से महैवे खुवाब था? मिरी हयात क्या हुई
लुटी कहां मताए दिल? वुह कायनात क्या हुई
वुह ना खुदा कहाँ गया? खुदा की ज़ात क्या हुई

दुआ भी साथ लेगया, दवा भी साथ ले गया
वुह ज़िंदगी का ना खुदा खुदा भी साथ लेगया

तड़प तड़प के हिज्र में वृह के गीत गाऊंगा
फ़साने तेरे इश्क़ के सितारों को सुनाऊंगा
मैं ख़ुद भी पहले रोऊंगा, तुझे भी फिर रुलाऊंगा
यह तेरी नाखुदाइयाँ, ख़ुदा को भी सुनाऊंगा

जो दे के दर्दे दिल मुझे, शफ़ा भी साथ लेगया
वुह ज़िंदगी का नाखुदा, ख़ुदा भी साथ लेगया

ठहर तो ऐ दिले हज़ीं ! क़ज़ा को भी पुकार लूं
जुनूं को अपने ढूंड लूं, ख़िरद को भी पुकार लूं
मुबादा भूल जाऊं मैं, मैं उनको भी पुकार लूं
मैं नाखुदा के साथ ही ख़ुदा को भी पुकार लूं

ना दार है, न वुह रसन, अना भी साथ लेगया
वुह ज़िंदगी का नाखुदा ख़ुदा भी साथ लेगया

मिरी यह आह शोलाज़ा हुई कहीं जो बे असर
अगर जिबीने शौक़ को मिला न तेरा संगे दर
तिरी तलाश में अगर रही मुझे न कुछ ख़बर
तो फ़िर हवादिसात से बचेंगे कब दिलो जिगर

जो क़ल्ब से सुकून की फ़िज़ा भी साथ लेगया
वह ज़िंदगी का नाखुदा, ख़ुदा भी साथ लेगया





❀ फ़र्ज़ी मुक़ाम ❀

——:o:——

अजब यह ज़माने का नैरंग है ❋ कि हर सिम्त आवेज़िशो जंग है

यह दुनिया गिरानी से लर्ज़ां है आज ❋ मगर खूने इंसाँ तो अर्ज़ां है आज

अखुव्वत के रिशतों को तोड़े हुये ❋ खुदा से भी हैं मुंह को मोड़े हुये

जिबीनों पे क़शक़ों की गुलकारियां ❋ दिलों में तअस्सुब की चिंगारियां

कोई ज़ात ऊंची कोई है कुज़ात ❋ बवा बन के फैली हुई छूत छात

मज़ाहिब से वैहदानियत दूर है ❋ इस इंसाँ से इंसानियत दूर है

यह मन्दर है पर्म आत्मा को लिये ❋ वुह मस्जिद खड़ी है खुदा को लिये

मनादिर में अल्लाह को गालियाँ ❋ मसाजिद में भगवान की ख्वारियाँ

मुसलमां का अल्लाह मुसलमान है ❋ जो शुद्ध होगया वुह तो भगवान है

बुतों से जो बिगड़ी बनी भी तो क्या ❋ यह ओछी लड़ाई ठनी भी तो क्या

मज़ाहिब ने माबूद जुदा कर दिये ❋ खुदा के हज़ारों खुदा कर दिये

किसी जा पे काबा, कहीं पर प्राग ❋ इन्हीं दो घरों ने लगाई है आग

न मस्जिद में अल्लाह, न मन्दर में राम

यह दोनो घरौंदे हैं "फ़र्ज़ी मुक़ाम"



* नज़रे अक़ीदत *

——:o:——

कहूँ मैं किस से हाले दिल ? कोई नहीं है दर्द मन्द
लबों पे है फ़ुग़ां मिरी, फ़ुग़ां से अर्श भी बुलन्द
बहार थी सो लुटगई, ख़िज़ां ने डाल दी कमन्द
ख़ुदा मिला न नाख़ुदा, हुआ यह आसरा भी बन्द

तमाम रिशते तोड़ कर, दिलों में याद छोड़ कर
वुह जारहे हैं "लाल चंद" हम से मुंह को मोड़ कर

बहुत है मुहतरम हमें तुम्हारी शाने सरवरी
दिलों को तुम ने मोह कर, दिलों पे की है अफ़सरी
तुम्हारी बात बात में मिली तुम्हें यह बरतरी
कहीं ख़ुदा की बंदगी, कहीं पे बंदा परवरी

ख़ुलूस का यह प्यार है कि दर्दो दाग़ दे चले
अंधेरी रात में हमें बुझा चिराग़ दे चले

यह तेरा अज़्मे आहनी, यह तेरी हक़ शनासियाँ
नसीब में बुलंदियाँ, जुलू में शादमानियाँ
खुलूस तेरे क़ल्ब में, निगह में मिहरबानियाँ
खुदा को भी पसंद हैं यह तेरी कामरानियाँ
किसी को तू अज़ीज़ है, कहीं पे सर बुलन्द है
बिसाते काइनात में तू हस्तिये बुलन्द है

तुम्हीं थे दर्द आशना, दर्द की दवा थे तुम
ग़रीब की दुआ थे तुम, मरीज़ की शफ़ा थे तुम
खुदा तुम्हारे साथ था, हमारे राहनुमा थे तुम
क़सम खुदा की लाल चन्द ! हमारे नाखुदा थे तुम
दिलों को चूर करदिया निगह से दूर हो चले
यह तुम ने क्या ग़ज़ब किया कि हम से दूर हो चले

मुहब्बतें हैं आप की फ़िराक़ में रुलाइये
यह आप का खुलूस है हमें बहुत सताइये
गुज़र चुकी जो क़ल्ब पर वुह ख़लक़ को दिखाइये
हमारी बे बसी है यह ज़ुरुर आप जाइये
यह होगा इश्क़ का मआल हमें ज़रा ख़बर न थी
बदल सकेंगे आप भी हमें ज़रा ख़बर न थी

ख़ुदा से शिकवा है हमें कि नाख़ुदा बदल गया
भटक रहा है कारवां यह रहनुमा बदल गया
दिलों का था जो आशना, वुह आशना बदल गया
बदल के बंदये ख़ुदा, ख़ुदा नुमा बदल गया
जिगर को अपने थाम कर दिलों का यह पयाम लो
बसद अदब झुके हैं हम हमारा अब सलाम लो



* हमारी ही बिल्ली हमीं से मियाऊँ *

——:o:——

किसानों ! तुम अपने मिहरबां तो देखो
खुदा का कर्म, उसका एहसां तो देखो
यह रोटी के मिलने का सामां तो देखो
तुम अपने दुखों का यह दर्मां तो देखो
न हो लाभ जिसमें वुह कारीगरी है * यह प्रदर्शनी एक जादूगरी है

यह जलसे की रौनक़ यह शौक़त तमाशा
नज़र का है धोका सदाक़त तमाशा
किसानों से इतनी मुहब्बत तमाशा
हकीक़त में सारी हक़ीक़त तमाशा
मदारी के हाथों की बाज़ीगरी है * यह प्रदर्शनी एक जादूगरी है

"गिरो मोर" की योजना भी है जारी
बड़े बोल भी हैं, स्कीमें भी भारी
यह इतनी तगोदों यह मिहनत तुम्हारी
फ़क़त ऐगज़ीबट तक यह रोनक़ है सारी
घड़ी दो घड़ी की यह ज़ोर आवरी है * यह प्रदर्शनी एक जादूगरी है

पराई ज़िमीं पर तुम्हारी खुदाई
ग़रीबों की दुनिया में यह किबरियाई
क़यामत के पुतले ग़ज़ब की ढिटाई
तुम्हीं ने मिरी आत्मा लूट खाई
ठगों को अनौखी यह सौदागरी है * यह प्रदर्शनी एक जादूगरी है

मैं सेवा में जिनकी जुगों सी बिताऊं
जिन्हें उम्र भर खून अपना चुसाऊं
ग़जब है उन्हीं की मैं ठोकर भी खाऊं
हमारी ही बिल्ली हमीं से मियाऊं
नई खुद परस्ती, नई खुद सरी है * यह प्रदर्शनी एक जादूगरी है

हटाओ तुम अपनी हवस का बखेड़ा
उखाड़ो यहां से यह खैमा यह डेरा
मिटाना है दुनिया से मुझ को अंधेरा
वह देखो ! उफ़क़ से वह निकला सबेरा
मिरे बस में क़ौमों की अब रहबरी है * यह प्रदर्शनी एक जादूगरी है



❋ तुम दूर दूर हो ❋

———:o:———

क़िस्मत हुये थे तुम कि रहो मेरे पास पास
यह वक़्त की है बात कि तुम दूर दूर हो

आओ न हम भी खोल दें सब राज़ तूर के
दुनिया यह जानती है कि तुम दूर दूर हो

पुंहचा मैं उन हदों में जहां तुम को छू सकूं
मंज़िल मिरे करीब है तुम दूर दूर हो

आजाते तुम भी देखते मेरा मआले कार
यह भी इक इत्तफ़ाक़ है तुम दूर दूर हो

कितनी कहानियां थीं जो तसनीफ़ हो चुकीं
पर दे की बात आई तो तुम दूर दूर हो

अल्लाह रे इज्ज़े नफ़्स ! मैं क़ुरबान आप के
दामन पे सिजदे करता सो तुम दूर दूर हो

क़िस्मत को देखता हूँ तो बिगड़ी हुई है वह
और तुम को देखता हूँ तो तुम दूर दूर हो

इश्क़ पैकरे जमाल ने शायर बना दिया
किस को सुनाऊं शेर कि तुम दूर दूर हो





* गुफ़्तनी—नागुफ़्तनी *

—:o:—

गुफ़्तनी ना गुफ़्तनी है मुंह मिरा खुलवाओ ना
क़लब जो कुछ सुन चुका वह ख़ल्क़ को सुनवाओ ना

तुम मिरी तक़दीर से उलझे रहोगे कब तलक
कब तलक यह ख़त्म होगी दास्तां, फ़रमाओ ना

बिजलियां भरलूं तो फूंकूं इस क़फ़स की तीलियां
शय परों में बर्क़ सी लहराये है घबराओ ना

क्या तमाशा है कि तक़सीमे अमल की बांट पर
उड़ रही हैं धज्जियां सी देख लो शरमाओ ना

बरहमी सी आचली है इस निज़ामे दहर में
आस्तीं को मत समेटो, जुलफ़ को बिखराओ ना





* आदमी के रूप *

—:o:—

आदमियों में फूल भी देखे
और उन में रसूल भी देखे

आदमी जब कि आदमी न रहे
उन में हम ने जहूल भी देखे

—:o:—

आदमी आदमी का भाई भी
भाई के रूप में क़साई भी

आदमी खो के आदमियत को
अब तो करने लगा खुदाई भी

आदमी बायज़ीद भी देखे
हक़ पे होते शहीद भी देखे

जब कहीं से उठी सादाये हुसैन
वहीं लाखों यज़ीद भी देखे



❁ मेरी दुआ ❁

—:o:—

सोचता हूँ कि क्या दुआ मांगू
हाथ उठे तो हैं दुआ के लिये

सिर्फ दो चार फूल हैं दरकार
मुस्करा दीजिये खुदा के लिये



* क़ज़यए ज़मीं *

———:o:———

तिरी खुदाई हो जिस जहां में, मैं वह जहाँ लेके क्या करुंगा
तुझे मुबारक यह लामकानी, मैं लामकाँ लेके क्या करुंगा

मैं रहने वाला हूँ इस ज़मीं का, मुझे ग़रज़ क्या है आसमां से
मुझे यह मेरी ज़मीन देदे, मैं आसमां लेके क्या करुंगा



* मालूम नहीं क्यों *

———:o:———

उस बज्म गहे नाज़ में मजमूअए दिल का
शीराज़ा बिखर जाये है मालूम नहीं क्यों

मैं मौत भी मांगूं तो बिगड़ती है क़ज़ा भी
आई हुई टल जाये है मालूम नहीं क्यों

होती नहीं तसकीन नमाज़ों में खुदा से
जी तुम से बहिल जाये है मालूम नहीं क्यों



❀ आप क्या जानें ❀

—:o:—

मेरी क़िस्मत में आप ? अरे तोबा ! !

इस मशीयत को आप क्या जानें ?

दिल कहां डूबता उछलता है

यह मुक़ामात आप क्या जानें



❋ चोंको तो ज़रा जागो तो सही ❋

——:o:——

जब रंग भरे तसवीरों में ❋ तदबीर मिटी तक़दीरों में
तुम उलझे रहे तावीरों में ❋ यां शोर सा है ज़ंजीरों में
चोंको तो ज़रा जागो तो सही

सब क़ाफ़ले वाले दूर गये ❋ हिम्मत से बड़े मसरुर गये
मजबूर जो थे मंसूर गये ❋ महमूद से बढ़ मज़दूर गये
चोंको तो ज़रा जागो तो सही

हिम्मत के सहारे जाओ तो ❋ तुम तोड़ के तारे लाओ तो
मंजधार से बाहर आओ तो ❋ यह नाओ किनारे लाओ तो
चोंको तो ज़रा जागो तो सही

कुछ काम तुम्हें भी करना है * रहमत से दामन भरना है
इज़्ज़त से उभरना बढ़ना है * या भीक पे जीना मरना है
चोंको तो ज़रा जागो तो सही

ग़फ़लत में कोई नुक़सान न हो * या जीने का सामान न हो
दुशमन की तुम्हें पहचान न हो * रस्ते में कहीं शैतान न हो
चोंको तो ज़रा जागो तो सही





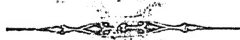
❁ कवि का अता पता ❁

———:o:———

स्वामी नाओं विचार के जनम लियो वा गांओं
ऋषियों का जो देश है मारहरा है नाओं

वाही शुभ स्थान में सोवत शाह बरकात
उसी बिरवा की डार हम चीके चीके पात

सूर लगाइयो ज्ञान कूं लाभ भयो भर पूर
सोओ अब आनंद सूं, बरसे छाजों नूर



प्रिन्टर पबलिशर :—
मुहम्मद अहीद उद्दीन [निज़ामी] एफ़० आर० एस० ए० (लन्दन)
मतबूआ निज़ामी प्रेस, बदायूं यू० पी० सन् १९५९ ई० में छपी ।



मिलने का पता :—

निज़ामी बुक ऐजन्सी बदायूं